Chap-3

===

:: तृतीय अध्याय ::

: शैलेश मटियानी की ग्राम्य-परिवेश की कहानियों में नारी के विविध रूप :

===

:: तृतीय अध्याय ::

: शैलेश मटियानी की ग्राम्य-परिवेश की कहानियों में नारी के विविध रूप :

प्रास्ताविक :

कुमाऊँ प्रदेश के जिला अल्मोड़ा के बाड़ेछीना गांव में शैलेश मटियानी का जन्म हुआ था । मूल नाम तो रमेशचन्द्र सिंह मटियानी था , परन्तु पहाड़ के होने के कारण उन्होंने अपना नाम शैलेश कर दिया था । उनका शैशवकालीन संघर्ष यहीं हुआ । उन्होंने स्वयं लिखा है : " मेरे सृजनात्मक-उत्सों का बीजारोपण सेलना-सौंल-खेत और धनसार वनों की हरी-गहरी घाटियों में विचरते-विचरते , ऊँचे-ऊँचे टीलों-चट्टानों पर चढ़ते-चढ़ते ही हुआ है । " [1] अतः यह स्वाभाविक ही होगा कि लेखक के रचना-संसार में ग्राम्य-परिवेश

की कहानियों का प्राधान्य मिले । मनुष्य-मात्र के जीवन में शैशवकालीन जीवन का महत्व होता है । बचपन में जो चित्र उसके मस्तिष्क में अंकित हो जाते हैं, वे जीवन भर उसकी स्मृतियों में रसे-बसे रहते हैं । उसमें भी लेखक या कवि तो अधिक संवेदनशील होता है, अतः उसके शैशव-कालीन जीवन का महत्व तो और भी बढ़ जाता है । मटियानीजी का मूल गांव है । उनकी नाल यहां गिरी है । अतः अपनी मिट्टी, अपनी जमीन से उन्हें बेइन्तिहा प्यार है । वे इस सन्दर्भ में कहते हैं — " मेरे आत्मिक संस्कार मुझे कुमायुं-खण्ड की मिट्टी की ओर खींचते हैं, मगर मेरा दायित्व बोध मुझे कहीं अन्यत्र खींच ले जाता है । फिर भी मेरे साहित्य-सृजन की आराध्या धरती-पार्वती ही है । ... मैं जानता हूं, धरती मैया की माटी सदैव उर्वरा होती है । उसके आंचल में एक दाना पड़ता है, अंकुराता है, इक्कीस दानों [illegible] की बाली उसके माथ पर अन्न-मुकुट-सी झूलने लगती है । धरती-माटी की इस उर्वरा-परंपरा ने ही कुमाऊं में इस आशिष-लोकोक्ति को जन्म दिया है — " एक की इकैसी हैजो, पांचों की पचासी । " .... और मैं भी जब-जब कुमाऊं की धरती-पार्वती के स्वरूप को आंखों में संजोए, कथा-सृजन की पूर्व-पीठिका को यज्ञ की स्वस्तिक-चिह्न-मंडिता वेदी की तरह संवारने लगता हूं, तो ऐसा लगता है, कि एक कथा-बीज को मैंने कहीं अपने मन की धरती में रोपा था, वह अंकुरा उठा है । " [2]

अभिप्राय यह कि मटियानीजी की कहानियों का एक पक्ष पहाड़ी ग्राम्य-जीवन है । यह शोध-प्रबंध नारी-जीवन के नाना रूपों से सन्दर्भित है, अतः प्रस्तुत अध्याय में ग्रामीण परिवेश की कहानियों में नारी के जो भिन्न-भिन्न रूप उपलब्ध हुए हैं उनका विश्लेषण एवं विवेचन करने का उपक्रम है ।

<u>फौजी-पत्नियां :</u>

कुमाऊं प्रदेश में गरीबी का प्रमाण अधिक है । पहाड़ी प्रदेश

होने के कारण काश्तकारी पर निर्वाह करना मुश्किल है । लोग भी खड़तल और मजबूत हैं , अतः थोड़ा-सा पढ़कर , आर्मी में भर्ती हो जाते हैं । ऐसे फौजी लोगों के घर की आर्थिक स्थिति तो थोड़ी सुधर जाती है , किन्तु उनके घरवाले , विशेषतः उनकी पत्नियाँ , निरंतर दहेशत में जीते हैं कि पता नहीं कब "जैहिन्दी" तार आ जाये । फौजियों के यहां या तो पत्र और मनीआर्डर आते हैं या फिर "जैहिन्दी" तार । कोई फौजी जब लड़ाई में या फ्रण्ट पर मारा जाता है , तब उनके घरवालों को सरकार की तरफ से ऐसे तार भेजे जाते हैं । अतः वे औरतें जिनके पति फौज में होते हैं तार आते ही ठाठें मारकर रोने लगती है । तार में कोई अच्छे समाचार भी हो सकते हैं , यह उनकी समझ से बाहर होता है । उनकी मानसिकता तो यह है कि अच्छे-भले में भला कोई तार क्यों भेजेगा ?

"पोस्टमैन" कहानी में इसी प्रकार का एक उदाहरण मिलता है । कमस्यारी गांव के प्रधान जसौंतसिंह नेगी का पुत्र रतनसिंह नेगी फौज में "सर्भिस" करता है । रतनसिंह नेगी की पत्नी जैंतुली पोस्टमैन दयाराम को पत्र और मनीआर्डर आने पर खूब मिठी चाय पिलाती है । मिठी चाय पिलाना पहाड़ों में स्नेह और आदर का सूचक है । एक दिन पोस्ट की "सार्टिंग" करते हुए दयाराम को मानो बिच्छू का डंक लग जाता है , क्योंकि कमस्यारी के जसौंतसिंह प्रधान के नाम एक तार का लिफाफा था । वह पोस्ट-मास्टर खयालीराम पांडे के आगे तबीयत का बहाना बना देता है । अतः खयालीराम को खुद जाना पड़ता है । वापस आने पर खयालीराम दयाराम से कहते हैं — " तकदीर का तू कुछ कच्चा ही निकल आया , यार दया बेटे ! तार लेकर पधान जसौंतसिंह नेगी के घर तेरी जगह पर मैं गया । अल्मोड़ा जो उनकी बेटी ब्याही है , उसके लड़का हुआ है । बेचारों ने खूब आवभगत की । ऊपर से आठ आने दक्षिणा दी के कि ब्राह्मण आदमी हो , खुशखबरी लाए हो । ... चलने लगा

था कि पधान की बहू पधान से बोली कि चार आने छोटे पोस्टमैन के लिए भी भेज दीजिए । अहा रे । बड़ी लक्ष्मी बेटी है । चाय में इतनी शक्कर घोली ... " 3

जिनके पति फौज में होते हैं उनकी मानसिक स्थिति का वर्णन लेखक इन शब्दों में करते हैं — " दयाराम अक्सर देखता कि जहां कहीं भी वह पहुंचता है , पलटनिया स्वामी वाली हर औरत हिरन की-सी आँखें और खरगोश के-से कान बना लेती हैं । दयाराम की ओर वे ऐसे देखती थीं , जैसे कोई लाम से पधारा हुआ फरिश्ता हो । कंधे पर के खाकी झोले और जेब में खोंसी कलम से लगता , जैसे वह उनके सौभाग्य-दुर्भाग्य का विधाता हो । वह लिफाफे या "मन्यौडर" की जगह कहीं तार ले आए , तो माथे का सिन्दूर पुंछता , दो हाथों की चूड़ियाँ टूटतीं और गांव-भर में मातम का गिद्ध अपने मनहूस डैने पसार देता ... " 4

"अर्द्धांगिनी" कहानी की रुक्मा सूबेदारनी सूबेदार नैनसिंह की पत्नी है । ऊपर उल्लिखित भय और देहशत का वातावरण यहां भी है । यथा —" रात के सन्नाटे में , नीचे घाटी की दिशा में सियारों का समवेत स्वर सुनाई पड़ता है और याद आता है , सूबेदारनी का आँचल ओंठों में दबाकर , यह बताना कि इसी वर्ष जुलाई में गांव के तीन घरों में तार आये । सुना , उधर अमृतसर में कोई लड़ाई हो गई ..." एक साया फौजियों के घर मंडराता रहा है महीने भर । " 5

"पोस्टमैन" कहानी के दयाराम को एक घटना याद आती है । मुवाणी गांव के धनसिंह बिष्ट का बेटा कश्मीर की लड़ाई में मारा गया था । दयाराम ही वह तार ले गया था । तब मरनेवाले की पत्नी भागुली दयाराम को दरांती लेकर मारने दौड़ी थी —

" मर जाए पोस्टमैन , तेरा पालने-पोसने वाला , जिसने तुझे ऐसे कुकर्म सिखाए । तेरी माँ-बहनों के काले चरयौ क्या पहले ही टूट चुके कि यह पापी तार मेरे घर वज्र गिराने को लाया ? अरे , तेरे गोठ का बैल , गांव का पधान मर जावे । मेरे बालकों को अनाथ कर गया तू । तेरी अमर होती हुई उमर को सहारा न मिले । जैसा जैहिन्दी तार तूने मेरे घर पहुंचाया , गोल्ल देवता के थान में बकरे काटूं , जो कोई तेरे घर भी ऐसा ही तार पहुंचा आवे । " 6

फौजी लोगों की पत्नियों के प्राण जहां एक तरफ सांसत में रहते हैं , उन्हें निरंतर साल-साल भर प्रतीक्षा करनी पड़ती है , वहां छुट्टियों में फौजियों के आने पर उन्हें प्यार भी भरपूर मिलता है । ब्रज में एक कहावत है — " जली तो जली , पर सिंकी भी खूब । " यह कहावत इन फौजी पत्नियों पर लागू होती है । "अर्द्धांगिनी" कहानी के नैनसिंह सूबेदार जब छुट्टियों में आते हैं , तो रुक्मा सूबेदारनी को खूब प्यार करते हैं । वन में जाकर तरह-तरह के पोज़ में फोटो लेते हैं , न्यौली टैप करते हैं । यथा — "सूबेदार एकाएक उठे अपनी जगह से सूबेदारनी साहिबा के सिर पर हाथ फेरते हुए "ओके" कहा और जंगली मृग होते , कुलांच मारते-से कुछ फासले पर हो गए । कभी कहें — माई डियर , जरा-सा बाएं , कभी जरा-सा दाएं । कभी मुस्कुराओ , कभी खिलखिलाओ और कभी न्यौली गाने की , फिर कभी जंगल में किसी खोए हुए को ढूंढने की-सी मुद्रा में हो जाओ — सूबेदारनी साहिबा को भी जाने क्या हुआ कि जैसा कहा वैसी होती गयीं । बीच में सिर्फ इतना ही बोलीं — " देखो जैसे तुम्हारा मन अघाता है , वैसा कर लो — मगर इस वक्त के फोटू मिलैटरी में चाहे अपने दोस्तों-दोस्तानियों को दिखाते फिरना , यहाँ रमुवा के बूबू [दादा] और दूसरे लोगों की नज़र नहीं पड़नी चाहिए — बहुत मजाक उड़ायेंगे लोग । कहेंगे घर में जगह नहीं मिली ... " " 7

नैनसिंह सूबेदार स्वमा सूबेदारनी की जो न्यौली टैप करते हैं, उसकी भाव-प्रवणता भी देखते बनती है --

" काटते-काटते फिर पल्लवित हो आता है
बांज का वन ...
समुद्र भर जाता है, मेरे प्राण,
नहीं भरता मन।
आश्विन मास की नदी में चमकती है
अकेला मछली ...
कौन जानता है, फिर कब होंगी भेंट।
वो देखो, उधर हिमालय की द्रोणियों में
कैसी चादर-सी बिछ गयी है बर्फ ...
पक्षी होती मैं, मेरे प्राण,
उड़ती, बस उड़ती ही चली जाती
तुम्हारी दिशा में। " 8

टैप की गई न्यौलियों को खुद सूबेदारनी ने सुना, तो पहले मुग्ध हुई और फिर फूट-फूट कर रो पड़ीं।

इस प्रकार का फौजी परिवेश "बर्फ की चट्टानें", "चिट्ठी के चार अक्षर", "उसने तो नहीं कहा था", "सीने में धंसी हुई आवाज़" इत्यादि कहानियों में मिलता है।

फौजी मातायें :

जिन मांओं के बेटे फौज में होते हैं उनके भी प्राण हमेशा सांसत में रहते हैं। यही कारण है कि "पोस्टमैन" कहानी का दयाराम जब डाकिया बनता है, तो उसकी मां उसे छाती से चिपका लेती है -- " मेरे लाल। आज मेरी छाती का पत्थर हटा। मैं डरती थी

कहीं तू भी पलटन में भरती न हो जाए । जाने कहां भड़ाम्, से बम फूटे , जाने कहां से तड़ाम् गोली आ लगे । सरकार के थान में बलि चढ़ाने की नौकरी ठहरी । .... लेकिन जब जिन्दा थे , तो इतना जरूर कहते थे तेरे बाप कि पोस्टमैनी की नौकरी में कोई खतरा नहीं । " 9

"सीने में धंसी आवाज" की कमला सूबेदारनी के पति लछमन सूबेदार फौज में ही थे और लड़ाई में मारे गये थे । अतः वह अपने बेटे आनंदसिंह का चौबीसों घण्टे पहरा देती थी कि कहीं वह भी फौज में भर्ती न हो जाए । परन्तु आनंदसिंह अपनी बात पर डटा रहा और एक दिन कमला सूबेदारनी ने उसके सीने में जो आवाज़ धंसी हुई थी , वह निकाल दी । अब सूबेदारनी वह आवाज़ सुनना चाहती है जो सूबेदार को मारने वाले दुश्मन के सीने को छेदने वाली गोली से निकले । उस पर कुन्ता ठकुरानी ने कहा था — " मगर सूबेदारनी , यह तो जरूरी नहीं कि तुम्हारा ही बेटा अपने बाप के दुश्मन को मारे ? जैसे लछमन सूबेदार मारे गए वैसे ही ... " 10

इस पर कमला सूबेदारनी कहती है — " क्यों ? कहते-कहते रुक क्यों गईं , कुन्ता ठकुरानी ? कहो न , कि जैसे बाप लछमन सूबेदार मारे गए थे , वैसे ही बेटा आनंदसिंह भी तो मारा जा सकता है ? मगर दीदी । मेरा बेटा मारा भी गया , तो भी मैं उस आवाज़ को झेलने की आदी हो जाऊंगी , जिसे हर सिपाही की घरवाली और हर सिपाही की मां को बर्दाश्त करना ही पड़ता है । .... जहाँ तक मरने-जीने का सवाल है , कुन्ता ठकुरानी , तुम्हारे मालिक गुमनामसिंह तो फौज में भर्ती नहीं हुए थे ? वो बेचारे तो घर पर ही सांप के काटे ... " 11

थोकदारीनियाँ :

कुमाऊं प्रदेश में गांव के मुखिया को थोकदार कहते हैं और थोकदार की पत्नी को थोकदारनी कहा जाता है। "लोक-देवता" कहानी में चीनी आक्रमण का विवरण आया है। बलभद्दर थोकदार सुनमे हैं कि बगल के गांव के जवानों को खुद उनकी घरवालियों, बहनों और xxxxxx महतारियों ने रोली-तिलक लगाकर, शंख बजाते हुए, भारत की रक्षा और शत्रु-वंश के संहार के लिए विदा किया है, तो वे भी अपना आपा खो बैठते हैं और गांव के जवानों को पलटन में भरती होने के लिए ललकारते हैं। परन्तु कुछ लोग अन्दर-अन्दर फुसफुसाते हैं और गांव में जो दश-ग्यारह जवान पलटन में भर्ती योग्य थे, वे भी इस फुसफुसाहट से कुछ टूट जाते हैं। तब बलभद्दर थोकदार खूब गुस्सा करते हैं अपने बेटे स्दरसिंह पर और खुखरी लेकर अपनी नाक काटने पर आमादा हो जाते हैं। तभी थोकदारनी पीछे से आकर थोकदार के हाथ से खुखरी छीन लेती है और थोकदार से कहती हैं — " अब बहुत पागलों जैसा रूप तुम भी मत xxxxxx दिखाओ। जरा चित्त शांत करो। स्दरिया अगर रणछेत्तर में जाने से न करेगा, तो मैं अपने हाथ से उसकी नाक काट दूंगी। मुझे भी नहीं चाहिए ऐसा कपूत, जिसकी कापुरुषाई से लजाकर बाप अपनी नाक काटने को सोचे ... लौटने दो आज छोकरे को। .... अरे, जब सारे गांव-इलाकों से लोगों के बेटे जा रहे हैं, तो हमारे बेटे भी जरूर जायेंगे रणछेत्तर में। औरों की महतारियों ने छाती पिला रखी है तो कोई हमने घुटने पिलाकर नहीं पाले-पोसे हैं बेटे। " [12] और दूसरे दिन बलभद्दर थोकदार का बेटा फौज में भर्ती होने चला जाता है। इस प्रकार लेखक शैलेश मटियानीजी ने कुमाऊं प्रदेश की ऐसी वीर-प्रसूता, अपनी आन-बान के लिए सर्वस्व का बलिदान करने वाली अनेक थोकदारनियों का वर्णन अपनी कहानियों में किया है। इन थोकदारनियों का भी

अपना एक ठस्सा होता है , एक स्वाब होता है , एक स्वाबा होता है । "वीरखम्भा" कहानी की थोकदारनी कमलावती भी ऐसी ही एक तेजस्वी थोकदारनी है । उसके पति भजंतासिंह उसे सुपियाली गांव से अपनी आन के खातिर ले आये थे । इसके कारण सुपियाली और ऊँचियाली गांव के बीच दुश्मनावट चल रही थी । भजंतासिंह के पिता थोकदार हनुमंतासिंह ने जो वीरखम्भा दो गांवों के बीच रखा था , उसे दूसरा कोई हटा नहीं सका । अतः सुपियाली वालों के लिए वह रास्ता बन्द था । पैंतीस वर्षों के बाद यह रास्ता थोकदारनी कमलावती के समझाने पर खुलता है । भजंता थोकदार सुपियाली के थोकदार बिकरमसिंह से कहते हैं —

" कमला ठकुरानी एक दुल्हन की तरह अपने मायके जायेगी और तुम्हारे ही साथ जायेगी , बिकरम ठाकुर ! वीरखम्मे के पास खड़ी मेरे पितर की आत्मा अपनी बहू की लौटती डोली देखना चाहती है । ... जितनी चौड़ी सड़क तुमने अपनी सुपियाली पट्टी से इस वीरखम्मे के पांवों तक पहुंचायी है , उससे भी दो हाथ ज्यादा चौड़ी सड़क अपने ऊँचियाली गांव से यहां तक लाऊंगा । कमला थोकदारनी की डोली आज आठ पग चौड़ी सड़क से मायके को बिदा हो रही , तो ऊँचियाली गांव की गृहलक्ष्मी की डोली बारह पांव चौड़ी सड़क पर होती घर-आंगन में उतरेगी । तभी यह वीरखम्भा , मेरा पितर-खम्भा भी तृप्त होगा । कमला थोकदारनी के कारण ही वीरखम्भा रास्ता रोके खड़ा था । आज जब कमला ठकुरानी के लिए , मायके की सड़क खुल गई , तो ससुराल की सड़क भी बंदिश में नहीं रहेगी ।" [13]

"पुरखा " कहानी में निरूपित थोकदारनी की पति-भक्ति और प्रेम सराहनीय है । आनंद थोकदार अब बूढ़े हो गए थे । उनके स्थान पर उनका बेटा पानसिंह अब थोकदार हो गया था । थोकदार आनंदसिंह के "हुकुमिया" स्वभाव को थोकदारनी ही सम्हाल सकती

थी । अब थोकदारनी नहीं है । उनकी मृत्यु हो चुकी है । तब थोकदार को उनकी याद आती है । उसका हृदयस्पर्शी चित्र लेखक ने अंकित किया है —

"थोकदारन की याद जब कभी आती है, थोकदार के कलेजे में कुछ गड़ने-सा लगता है । थोकदारन के रहते तो यह था कि चोट थोकदार को लगी, आँसू थोकदारन की आँखों में । ... लाख रूठी हों, जरा ठुड्डी ऊपर उठाके कुछ प्रेम से कह दिया, तो अपने कपोलों की लाली कहाँ छुपाये थोकदारन ? " [14]

ठकुराइनें :

मटियानीजी के कथा-साहित्य में कुमाऊँ का ग्रामीण परिवेश मुख्यतया दृष्टिगोचर होता है । पहाड़ों के सभी गाँवों में प्रायः ठाकुरों की बस्ती पायी जाती है, अतः उनके नारी-पात्रों में ठकुराइनें भी पायी जाती हैं । "लीक", "उसने तो नहीं कहा था", "दशरथ", "नंगा", "सावित्री", "कालिका-अवतार", संस्कार" प्रभृति कहानियों में हमें नारी-पात्रों के रूप में कुछ ठकुराइनें मिलती हैं । "लीक" कहानी के ठाकुर गोपालसिंह के कई ठकुरानियाँ हैं । पारबती उनकी तीसरी "जोरू" है । वह कन्यावस्था में ही अपनी पट्टी रोठागाढ़ से बदफेली-बदनामी को दराती से कटने-चिरने से बचाने के लिए, अलमोड़ा के हैदरअली कलाल के साथ रामपुर को भाग रही थी । सद्भाग्य से उसकी भेंट ठाकुर गोपालसिंह से हो गयी । गोपालसिंह ने उसको अपनी "नौली" बनाकर रखा । उसे खूब प्यार और मान-सम्मान दिया । [15]

"उसने तो नहीं कहा था" को लछिमा ठकुरानी की चर्चा नगरीय परिवेश के नारी-पात्रों के अन्तर्गत करेंगे, क्योंकि उसमें जो "देशगत" परिवेश है वह अलमोड़ा और पिथौरागढ़ शहरों का है ।

"दशरथ" कहानी के ठाकुर साधोसिंह सिराड़ी के भी राजा दशरथ की भाँति तीन-तीन पधानियां हैं — सबसे बड़ी कमुली पधानी, मंझली सल्ली पधानी और सबसे छोटी कलावती पधानी। दशरथ के भी तीन रानियां थीं -- कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी। लेखक ने भी साधोसिंह की तीन पधानियों को उन्हीं की तुलनीयता में रखा है। चिरतई की रामलीला कमेटी आश्विन की रामलीला के लिए ठाकुर साधोसिंह का खेत चाहती है और इसलिए वे लोग साधोसिंह को रामलीला में "दशरथ के एक्टर" के लिए चुनते हैं। दशरथ का एक्टर बनने के मोह में ठाकुर अपनी एक फसल भी बरबाद करवा देता है। ठाकुर साधोसिंह सिराड़ी दशरथ का एक्टर होने के लिए रात-दिन "पिये तुम काहेको होत मलीन ? " वाला "बिहाग गाना" और "हा राम ! हा राम " करते रहते हैं और सचमुच में राम-वनवास वाले दिन साधोसिंह को खाँसी उठती है, तो भरत-मिलाप के दूसरे दिन ही उनके प्राण पखेरू उड़ जाते हैं। तीनों पधानियां खूब विलाप करती हैं। छोटी पधानी कलावती रुदन करते हुए कहती है — " हाई, मेरे आनन्द के बौज्यू, देख लो, आखिर तुम्हारी झांझी को कन्धा लगाने के लिए खत्याड़ी से भरत-जैसा मेरा बेटा आनन्द ही आया हो ! ... " [16]

"कालिका-अवतार" में सिलगढ़ी गांव की ठकुरानी की कथा है। वह ठाकुर रनबहादुरसिंह की पत्नी है। एक बार जब वह कुंवारी थी, तब उसके चचेरे भाई शंकर ने उस पर बलात्कार की कोशिश की थी। ठाकुर-कन्या ने उसे "नीच-कुत्ते" कहते हुए उसके मुंह पर थूक दिया था। तब शंकरिया ने कहाx कहा था — "कुत्ता कहा है, तूने ? ससुरी, कभी काटूंगा जरूर ! " और उसे काटने का मौका मिल जाता है। रनबहादुर का इकलौता बेटा करनबहादुर क्यांकुरी वन में गया था। वहाँ पैर फिसलने से तालाब में गिर गया। गांव के लोगों ने कहा उसे "देव-पकड़" हो गई है।

बेतड़ी से उसी शंकरिया को बुलाया जाता है जो शंकरधामी नामक विख्यात "जंगरिया" हो गया है । जंगरिया भूत-प्रेत और देव-पकड़ निकालने वाले ओझा को कहते हैं । शंकरधामी करनबहादुर में से चुड़ैल निकालने के बहाने उसे तरह-तरह से प्रताड़ित करता है और अन्ततः उसे मार डालता है । ठकुरानी इसका बदला लेती है । वह शंकरधामी के देवदास उपन्याठीराम को विश्वास में लेती है और अमुवाने लगती है । प्रचारित किया जाता है कि करन की चुड़ैल ठकुरानी में समा गई है । फिर शंकरधामी को बुलाया जाता है और खूब जोर से अमुवाते हुए ठकुरानी शंकरधामी को मार डालती है । देव-दास उपन्याठीराम जोर-जोर से बोलता है कि ठकुरानी में मैया जगदम्बा कालिका ने अवतार लिया है और सिलगढ़ी के भाग्य जग गए हैं । इस प्रकार ठकुरानी शंकरधामी को उसके ही हथियार से मारती है । [17]

मटियानीजी की कहानियों में सभी ठकुराइनें तेजस्वी हैं, ऐसा भी नहीं है । बहुत-सी ठकुराइनें तो व्यक्तित्वहीन और लकीर की फकीर हैं । "नंगा" कहानी की हंसुली ठकुरानी न्याय का पक्ष लेने के बदले अपने पति का झूठा पक्ष लेती है । "संस्कार" कहानी की ठकुरानी के सामने उसका बेटा दम तोड़ रहा है, पर उसे उसकी चिन्ता नहीं, जमीन-जायदाद की चिन्ता है ।

"सावित्री" कहानी की सावित्री मूलतः मिरासीन है, पर ठाकुर से विवाह करके न केवल उसकी गृहस्थी संभाल लेती है, बल्कि उसके बिन-मां के बेटे को मां का प्यार भी देती है । उसकी मां कलावती तो उसे ठाकुर के साथ इसलिए लगा देती है कि वह ठाकुर से ज्यादा-से-ज्यादा पैसे निकलवा सके, पर सावित्री के भीतरी संस्कार उससे कुछ दूसरा ही करवाते हैं । मेले में आए ठाकुर से वह कहती है — " और हां, यह तो मैं तुमसे पूछना ही भूल

गई । पहली वाली दीदी का मुन्ना आखिर कब तक ननिहाल में पड़ा रहेगा दूसरे के भरोसे ? बेचारा मां की ममता को तरसता होगा वहां ... मेले से लौटते ही उसको घर वापस ले आना है । ... अब पूरे तीन दिनों तक मेला चलता है, तो क्या यह जरूरी है कि हम भी पड़े रहें ? कितना रूपया आलतू-फालतू चीजों में खर्च हो जाता है यहां ? उठो, वापस चलने की तैयारी करो । मैं तुम्हारे कपड़े तहा कर देती हूं । गिरस्थी ऐसे घर-फूंक तमाशा देखने की चीज नहीं । "[18] यही कहानी "पापमुक्ति तथा अन्य कहानियां" कहानी-संकलन में "गृहस्थी" नाम से भी प्रकाशित हुई है ।

पधानियाँ :

~~ऐसे×हरे~~ गांव के मुख्य व्यक्ति या पंचायत के सदस्य या प्रधान की पत्नियाँ मूलतः {प्रधानियाँ} और प्रधानियों से पधानियां हुआ } कहा जाता है । इनमें प्रायः ठकुराइनें होती हैं । कुमाऊं प्रदेश के बुजुर्ग पुरुष अपनी पत्नी को "पधानी" कहने में विशेष गौरव का अनुभव करते हैं । "घुघुतिया त्यौहार" कहानी का देवराम ठाकुर और थोकदार कल्याणसिंह का हलिया है । कल्याणसिंह लक्ष्मी ठकुरानी के ककिया ससुर हैं, पर उसकी ही जमीन को हड़पना चाहते हैं । ठाकुर साहब के भतीजे की मृत्यु हो गई है और लक्ष्मी ठकुराइन उसकी विधवा है । इस मामले में पांच-पंचों में देवराम को भी शामिल किया जाता है । जिस दिन पंचायत में जाने का होता है उस दिन देवराम भी अपनी पत्नी जसुली को "पधानी" कहता है । यथा—
"थोकदार ज्यू पुकार रहे, तो क्या मैं जरा चैन से बैठकर एक दम तमाखू भी न लगाऊं ? चाकरी-बेगारी करते-करते तो ससुरी कई पुश्तें खतम हो गयीं, मगर सुख और इज्जत का एक दिन भी नहीं देखा हम लोगों ने ... बहुत ज्यादा दब के रहना भी ठीक नहीं । दबकर रहने वाले पेड़-पौधे भी कभी ठीक से नहीं पनपते, पधानी ! हम तो

आखिर इन्सान हुए ? ... हाई , आज तुम बिलकुल ही पगला गये क्या ? मुझको पधानी कहते हो ? — जसुला शरमाते हुए बोल उठी । .... क्यों पधानियों के सींग-पूंछ होते क्या ? " [19]

नौलियाँ :

कुमाऊं प्रदेश में पहले संपन्न लोग दो-दो , तीन-तीन पत्नियाँ कर लेते थे । इसका एक आर्थिक पक्ष भी हुआ करता था । स्त्रियों से खेतीबाड़ी तथा पशुपालन के काम में काफी सहायता रहती है , अतः वहाँ एकाधिक पत्नियों को करने का रिवाज-सा चल पड़ा था । जो स्त्रियाँ ब्याहता नहीं होतीं , जिनको रख लिया जाता है , उनको "नौली" कहा जाता है । " अंतिम तृष्णा" कहानी में लेखक की इस संदर्भ में एक टिप्पणी मिलती है —

" शहर से लगे खासपर्जा कहे जाने वाले गांव के किसान दूध बेचने का धंधा ही मुख्य रूप से करते । तीन-तीन चार-चार भावरी भैंसें बांधे रहते और "भैंस पीछे नौली" {नवेली} की कहावत कई लोगों पर खरी उतरती । नौकर रखने से काम कायदे से नहीं चलता , क्योंकि एक तो नौकर ने मन लगाकर काम नहीं करना , दूसरे तनखा लेनी नकद , इसीसे नौकर की जगह नौली ले आने में ज्यादा फायदे देखे जाते । हालांकि बाद में जब तीन-तीन के बच्चों की रेहड़ संभालना पड़ता , तो और ज्यादा सांसत होती । आंगन में सुअरी के बच्चों की-सी भीड़ होती । " [20]

"अंतिम तृष्णा" कहानी का रतनसिंह अपनी पत्नी लछिमा को बहुत चाहता था , परन्तु उसे पहले मियादी बुखार और बाद में टी०बी० हो जाता है । अतः न चाहते हुए भी उसे "नौली" लानी पड़ती है । रेवती , रतनसिंह की नौली है । देखने में ही नहीं , बल्कि स्वभाव की भी अच्छी है रेवती । वह रतनसिंह की गृहस्थी ही नहीं संभालती , लछिमा और उसकी बेटी का भी खूब ध्यान

रखती है । रेवती का लछिमा के प्रति व्यवहार इतना मानवीयतापूर्ण है कि नौली लाने के पीछे वह रतनसिंह से तो फिर भी रुष्ट हैं, परंतु रेवती के लिए उसके मन में कोई बुरा भाव नहीं है । मरते समय वह उसे आशीर्वाद ही देती है । यथा —

" फिर रतनसिंह का हाथ छोड़कर, धीमे स्वर में पुकारा —' रेवा ...' ' दीदी ' । ' कहती रेवती, उसके एकदम समीप आ गई । जानकी को उसने गोद में पकड़ रखा था । लछिमा ने पहले रेवती और जानकी के मुंह पर हाथ फेरा । फिर एकदम शांत स्वर में बोली — " बहना, मेले त्यौहार आयेंगे । महतारी वाली छोरियां रंगीन बेलबूटे वाली झगुली पहनेंगी । ... तू इस अभागिनी छोरी को भी जरूर रंगीन झगुली पहना देना । महीने-महीने इसका सिर कटोर कर जूं मार दिया करना । ... बहुत पुण्य मिलेगा तुझे । बड़ी भागवान बनेगी तू । ... भगवान तुम दोनों को हमेशा सुखी रखेगा । सासू, मां की जगह हुई, उलट के जवाब कभी भूलकर भी नहीं देना । ... " [21]

"रुका हुआ रास्ता" की गोमती भी खीमसिंह की नौली है । गोमती का पहला पति मधनसिंह पलटन में फौद हो गया । पहले तो उसने अब दूसरा ब्याह न करने का फैसला किया था, परन्तु गांवों में अकेली निस्सहाय विधवा औरत का रहना भी मुश्किल है । अतः वह खीमसिंह के नौली बनकर आ गयी थी । परन्तु सुख के चार दिन काटे ही थे कि नंदादेवी के मेले में खीमसिंह को "लकुवाबाई" मार गई । गोमती के कलेजे में मानो कांटे-सा अटक गया था कि वह अपनी करनी भुगत रही है, धरम के स्वामी मधनसिंह के नाम कलंक लगाने का दंड वह भुगत रही है । [22] गोमती एक अच्छी स्त्री है । नसीब की मारी है । वह खीमसिंह की खूब सेवा करती है । पर लकुवा के कारण घर-बाहर के काम अब उसे करने पड़ते हैं । वह खीमसिंह का ही भला सोचकर जंगल में हरी घास लेने जाती है कि भूरी को हरी घास मिलेगी तो चार धार दूध की ज्यादा ही छोड़ेगी । पर लकुवा

के कारण खीमसिंह का स्वभाव भी अब चिड़चिड़ा हो जाता है । वह चौबीसों घण्टों गोमती को कोसता रहता है । उसे "सुसरी" , "रंडा" "पातर" जैसी गालियाँ देता रहता है और रात-दिन भुनभुनाता रहता है । एक बार गोमती के आने में थोड़ी देर हो जाती है , तो खीम-सिंह उसे भला-बुरा कहता है —

" अरे , कौन औरत किस लोभ से किस वन में डोलती , इसे कौन जान सकता है । जब तक मुझ पर लकुवाबाई नहीं पड़ा था , तब तक क्यों नहीं उठे तेरे चलुवा पैर जंगलों की तरफ ? अरे , मैं लूला-लाचार आदमी तुझ जैसी संड-मुसंड औरत को कैसे काबू में रख सकता ... । तुझ ससुरी के पालने वालों में से एक न बचे । यहाँ मेरी पिशाब के मारे हवा खुश्क हो रही और यह सुसरी जरा सहारा देकर नीचे को कहाँ ले [illegible] जाएगी , उलटे अपनी चार सौ बीसी की बातों में फंसा रही है । तेरा हाथीमार्का गोल डिब्बा तो दिन में ही भर गया था ससुरी । " [23]

खीमसिंह के रात-दिन के ऐसे नटोरे और खेतीबाड़ी का काम सम्हालते हुए किसनसिंह की मीठी चिकनी-चुपड़ी बातों से एक बार तो गोमती का मन चलित हो जाता है , परन्तु किशनसिंह की माँ से यह सुनकर कि खीमसिंह पिशाब के मारे न जाने कबसे गोमती को पुकार रहा है और गोमती न जाने कहाँ चली गई है , वह किशनसिंह के घर के पिछवाड़े से निकलकर सीधे अपने घर पहुंच जाती है । किशनसिंह पुकारता हुआ ही रह जाता है । कहानी का एक दूसरा पहलू यह भी है कि किसनसिंह की ब्याहता पत्नी गांगुली गुलबिया सिपाही के साथ भाग गई थी और तब से किशनसिंह गोमती के पीछे अपने स्वार्थ से लगा हुआ था और उसके खेतीबाड़ी के कामों में मदद करता था । इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में स्त्री के दोनों रूप हमें मिलते हैं । गोमती नौली होते हुए भी एक सती-साध्वी

स्त्री है, तो दूसरी तरफ गांगुली स्त्री-वंचना का उदहरण प्रस्तुत करती है।

"संस्कार" कहानी की बांगुली जसौंतसिंह प्रधान की नौली है। वह अपने साथ परताप को लेकर आई थी। बांगुली प्रधान को ऐसी फली कि उसके आने के बाद प्रधान की पहली घर-वाली रेवती को दो बेटे हुए — रामसिंह और भीमसिंह। परताप फौज में भरती हो गया है। रामसिंह और भीमसिंह खेतीबाड़ी का काम संभाले हुए हैं। बांगुली और रेवती दोनों का निधन हो चुका है और जसौंत प्रधान भी जाने की तैयारी में है, परंतु जसौंत प्रधान की मां अभी जीवित है। जसौंत प्रधान के प्राण परताप में अटके हुए हैं। वे बार-बार परताप को बुलाने के लिए तार देने की बात करते हैं, परंतु जसौंत प्रधान की मां तथा रामसिंह-भीमसिंह के मन में पाप है। वे सोचते हैं कि कहीं जसौंत प्रधान जाते-जाते परताप को जमीन-जायदाद में हक न दिलाते जाएं। परताप की पत्नी भगवती इस बात को लेकर दुःखी हैं कि इस अंतिम बेला में जमीन-जायदाद के झगड़े में उसके पति को, उसकी मोतिमा के बाबू को, नहीं बुलाया जा रहा है। वह छेत्तरपति वैद्य के पैरों में पड़ जाती है और कहती है —

" "छेत्तरपतिज्यू, पांव पड़ती हूं। मेरी मोतिमा के बाबू को एक तार भिजवा दो। अब नहीं बिसरूंगी कभी। इन निठुरों से तो जल नहीं फूटता। इनकी टीस-पीड़ का पानी तो इसी डाह से सूख गया है कि पधान सौरज्यू मेरी मोतिमा के बाबू को ज्यादा लाड़ करते हैं। ये निठुर कहते हैं कि 'परताप हौलदार तो नौली के साथ का पराया पूत आया हुआ है। जसौंत पधान की लटी-पटी जमीन-जायदाद में परताप हौलदार का मौरूसी हक थोड़े ही हो सकता है।' " 24

यहाँ गौरतलब बात यह है कि ये लोग परताप का हक इसलिए नहीं मानते हैं कि वह "नौली" का बेटा है और रामसिंह-भीमसिंह ब्याहता औरत रेवती के पुत्र हैं ।

प्रस्तुत कहानी में "नौली" बाँसुली के शील-स्वभाव का वर्णन भी लेखक ने किया है । मरण-शैया पर पड़े हुए जसौंत प्रधान अपने बेटे , बाँसुली के बेटे , परताप से कहते हैं — ' प-र-ता-प ... मेरा सच्चा बेटा तू ही है , लला । इस सच को धरती-धरमराज दोनों जानते हैं । तू गर्भ में था , तभी मैं तेरी महतारी को लाने को मजबूर हो गया था । बड़ी लछमी नार थी ... अब तो , बेटे चलाचली का समय आ गया है । ... एक मजमून तैयार कर । मेरी सारी जमीन-जायदाद , मेरी सारी लटी-पटी में मौरूसी हक सिर्फ तेरा ही बदस्तूर रहेगा ... सांस टूटने से पहले दसखत करा लो मेरे ...' [25] पर परताप में भी जसौंत प्रधान और बाँसुली के गुण आए हुए हैं । वह इसके लिए मना कर देता है कि उसके लिए उनके आशीर्वाद ही पर्याप्त हैं ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि कुमाऊं प्रदेश में पहले "नौली" रखने का आम रिवाज था । गाँव के प्रधान और धनी-संपन्न लोग कई बार कई-कई नौलियाँ रख लेते थे । इस प्रदेश में "नौली" पर लोकगीत भी पाए जाते हैं । "अर्द्धांगिनी" कहानी का नैनसिंह लक्ष्मा सूबेदारनी से इन "नौली-गीतों " को टेप भी करवाता है । [26]

सपत्नियाँ :

पुराने समय में हमारे देश की विवाह-पद्धतियों में एक बहु-विवाह" (Polygamy) पद्धति होती थी । इसके दो भेद मिलते हैं — बहु-पतिविवाह (polyandry) और बहु-पत्नीविवाह (polygyny) । महाभारत की द्रौपदी का उदाहरण "बहु-

पतिविवाह " का प्रभाव है । इसके विपरीत है — " बहु-पत्नी-विवाह " [Polygyny][27] कुमाऊं प्रदेश में इसका प्रचलन ज्यादा था । यह पहले एकाधिक बार कहा गया है कि कुमाऊं प्रदेश में गांव के प्रधान तथा धनी-मानी लोग एक से अधिक पत्नियां रख लेते थे । अब एक-पत्नी कानून के आ जाने से उस पर रोक लग गई है, परंतु अभी भी कहीं-कहीं ऐसे विवाह होते हैं ।

"रमौती" , "दशरथ" , "लीक" , "संस्कार" , "अंतिम तृष्णा जैसी अनेक कहानियों में हमें "बहुपत्नियां" मिलती हैं । कहीं-कहीं तो ये बड़े संप, सहकार और स्नेह-सौहार्द से रहती हैं । इसमें बड़ियों को छोटियां "दीदी" से सम्बोधित करती हैं । इनमें परस्पर "बहनापा" भी पाया जाता है । जिसे "सौतिया-डाह" कहते हैं, ऐसा बहुत कम कहानियों में दृष्टिगत होता है ।

"दशरथ" कहानी में साधोसिंह सिराड़ी की तीन पत्नियां हैं — कमुली , सल्ली और कलावती , बिलकुल राजा दशरथ की तर्ज पर । इनमें किसी प्रकार का ईर्ष्या-द्वेष हो , ऐसा कहीं दिखाया है नहीं है । साधोसिंह के मरने पर कलावती के रुदन में हल्का-सा कैकेयी-भाव मात्र प्रकट हुआ है — " हाई , मेरे आनन्द के बौज्यू , देख लो , आखिर तुम्हारी झांझी को कंधा लगाने को सत्याड़ी से भरत-जैसा मेरा बेटा आनन्द ही आया हो । ... "[28]

"अंतिम तृष्णा" कहानी की लछिमा को जब लम्बी बिमारी हो जाती है , तब रतनसिंह नयी नौली रेवती को ले आता है । इससे लछिमा की आत्मा को घुनसी लग जाती है । पर यहाँ भी लछिमा के दुखियाने का कारण रतनसिंह का वह "बड़बोलापन" है । लछिमा रतनसिंह पर नाराज़ है । रेवती का लछिमा के प्रति व्यवहार अत्यन्त मानवीयतापूर्ण है । लछिमा भी रेवती को कभी नहीं कोसती ,

बल्कि अपनी अंतिम बेला में रेवती को आशीर्वाद भी देती है [29] ।

महतारियाँ :

मटियानीजी ने अपने कहानी-साहित्य में स्त्री के महतारी रूप को — माता के रूप को, विशेष रूप से उकेरा है । माँ की महिमा का गान वे लगभग अपनी सभी कहानियों में करते हैं । "संस्कार" कहानी की बड़ी पधानी इसका एकमात्र अपवाद है । बड़ी पधानी प्रधान जसौंतसिंह की माँ है । जसौंतसिंह मृत्यु शैया पर लेटा हुआ है, पर बड़ी पधानी जमीन-जायदाद और लटी-पटी के मौरूसी हक में उलझी हुई है । जसौंतसिंह अपने बेटे परताप को बुलाना चाहते हैं । उनके प्राण उसमें अटके हुए हैं । पर बड़ी पधानी अपनी प्रपंच-लीला में उलझी हुई हैं । परताप की पत्नी भगवती अपने पति को बुलवाने की बात करती है, तब बड़ी पधानी उसके लिए भी भली-बुरी बातें कहती हैं । यथा —

" द, तुझ तिलुली का कैकेयी जैसा विलाप तुझको ही धो-पोंछ के उठा ले जाए ! ... अब आखिरी बखत में अपनी छाती का अपवित्र दूध पिलाकर, मेरे जसौंतिया के लोक-परलोक क्यों खराब कर रही है ? " [30] यहाँ भगवती बहू होते हुए भी अपने ससुर की जी-जान से सेवा कर रही है और बड़ी पधानी माँ होते हुए भी चाह रही है कि परताप के आने से पहले ही जसौंत के प्राण पखेरू उड़ जाये तो अच्छा ।

इस एक कहानी को छोड़कर अन्यत्र माँ का वही ममता-भरा चित्रण लेखक ने किया है । "अहिंसा" कहानी की बिन्दा मरणान्तक यातनाओं के बीच भी अपने बच्चों की चिन्ता करती रहती है । बच्चों के खातिर वह रात-दिन टाँगे में लगी घोड़ी की तरह खटती रहती है । बिन्दा का पति जगेसर बच्चों की तरफ से निश्चिंत

था , क्योंकि उसे विश्वास था कि मेहनत-मजदूरी कुछ भी करके बिन्दा अपने बच्चों का पेट पाल सकती है । बिन्दा का बड़ा करुणापूर्ण चित्रण लेखक ने किया है —

" जो औरत मरणांतक यातनाओं के बीच भी बच्चों को यह आश्वासन देती , जाने कैसे मुस्कुराती , बड़े इत्मीनान से बोलती आई है कि , "जिनावरों को ठीक से रखना । हम जल्दी में वापस लौटूंगी । " — उसको इस रूप में वापस ले जाना कि बच्चे "अम्मा ! " चिखते हुए छाती पर गिर भी पड़ें , तो भी वह आँखें खोलकर देख तक न सके ..." 31

जिस अस्पताल में बिन्दा को दाखिल किया है , उसमें एक किशोर वय का लड़का दम तोड़ देता है , तब "बिन्दा की आँखों से कैसे आंसुओं की लड़ी-सी बंध गई थी ? उसका मां होना कैसे पूरी पृथ्वी को बेधता-सा मालूम पड़ता था ? लगता था , जैसे अपने दोनों बच्चों को उसने अपनी कांखों में दबा लिया है और उन्हें लिये-लिये जाने कहाँ , किस लोक को उड़ जाना चाहती है । " 32

"अंतिम तृष्णा" की लछिमा के प्राण भी अपनी पोथी (बेटी) में अटके हुए हैं । वह रेवती से कहती है : " बहना , मेले -त्यौहार आयेंगे । महतारी वाली छोरियाँ रंगीन बेलबूटी वाली झगुली पहनेंगी । ... तू इस अभागिन छोरी को भी जरूर रंगीन पहना देना । इसकी लटी करके , रंगीन फुन्ने लगा देना । महीने-महीने इसका सिर कटोर कर जूं मार दिया करना । ... बहुत पुण्य मिलेगा तुझे । बड़ी भाग-वान बनेगी तू । " 33 लछिमा का उक्त कथन जानकी पोथी के प्रति उसकी मोह-माया-ममता को रेखांकित करता है ।

" कालिका- अवतार" की ठकुराइन अपने बेटे करनबहादुर के के लिए जगदम्बा कालिका का रूप धारण करके उसके हत्यारे शंकर धामी

को यमद्वार पहुंचा देती है । चुड़ैल का बहाना बनाकर शंकरधामी अपनी पुरानी दुश्मनी निकालता है, तब देवदास उपन्याठीराम को विश्वास में लेकर ठकुराइन शंकरधामी को मारने की योजना बनाती है और उसमें वह सफल भी होती है । इस कहानी से यह प्रमाणित होता है कि स्त्री कोमल होती है, उसमें माया-ममता होती है, पर वही कमजोर स्त्री अपनी संतानों के लिए कालिका भी बन सकती है ।

"सीने में धंसी आवाज़" की कमला सूबेदारनी नहीं चाहती कि उसका बेटा आनंदसिंह फौज में भर्ती हो । वह चौबीसों घण्टों अपने बेटे का पहरा देती है कि कहीं वह पलटन में न चला जाये । इसके पीछे भी यही मातृ-वात्सल्य की भावना है । परन्तु इसके कारण जब आनन्द दिन-ब-दिन मुरझाता जाता है और एक दिन उसका यह विस्फोट उसके होठों-जबान पर आ जाता है, तब वही कमला सूबेदारनी अपने कलेजे पर पत्थर रखकर बेटे को हंसते-हंसते फौज में भर्ती होने के लिए भेज देती है । यथा —

"मां, पिताजी तो हमारे लड़ाई के मैदान में मारे गए थे, मगर तूने मुझे घर में ही मुर्दा बना दिया है।" [34]

"पोस्टमैन" कहानी में दयाराम पोस्टमैन जब डाकिये की नौकरी के लिए कस्बे में जाता है तब वे उसे अपनी छाती से चिपका लेती है । उनको हमेशा एक डर रहता था कि दयाराम कहीं फौज में भर्ती न हो जाए । अतः जब उसे डाकिये की नौकरी मिलती है, तब उनकी छाती पर से एक बहुत बड़ा बोझ हट जाता है, क्योंकि दयाराम के पिता कहा करते थे कि पोस्टमैनी की नौकरी में कोई खतरा नहीं होता । [35]

ऐसी तो अनेकों कहानियां हैं जिनमें लेखक ने महतारी के अन्नपूर्णा एवं दुर्गा रूप को चित्रित किया है । कुछ कहानियां पहाड़ी

परिवेश की ही हैं, परन्तु उनका परिवेश पहाड़ी नगरों का परिवेश है, अतः उनकी चर्चा नगरीय परिवेश के अन्तर्गत यथेष्ट स्थान पर किया जायेगा ।

सास :

मटियानीजी की ग्रामभित्तीय कहानियों में हमें संयुक्त-परिवार का परिदृश्य बार-बार दृष्टिगोचर होता है । अतः यहाँ सास के रूप में नारी-पात्र भी बहुतायत से उपलब्ध होते हैं । कुमाऊं बोली में "सास" के स्थान पर "सासू" शब्द प्रयोग में लाया जाता है । गुजराती में भी "सास" को "सासु" कहा जाता है । भाषा-वैज्ञानिक दृष्टि से मटियानी जी या शिवानीजी या अन्य कोई कथाकार का अध्ययन इस दृष्टि से रसप्रद हो सकता है, क्योंकि गुजराती और कुमाऊंनी बोली में बहुत-से शब्दों में यह साम्य दिखाई पड़ता है । परंतु यहाँ हमारा उपक्रम मटियानीजी की कहानियों में निरूपित नारी-पात्रों में "सास" के पात्रों का आकलन है ।

प्रायः सास-बहू के xxxxxx सम्बन्धों में हमें लड़ाई-झगड़े और विरोध और स्पर्द्धा के भाव मिलते हैं । परन्तु यहाँ प्रायः उसका अभाव-सा दिखता है । बहुएं अपनी सासों को खूब मान-सम्मान देती हैं । "अंतिम तृष्णा" कहानी की लछिमा की सास लछिमा को बहुत चाहती है । वह गांव में सबसे कहती फिरती है कि " मेरी लछिमा-जैसी गांव में कोई नहीं ।"[36] लछिमा का पति रतनसिंह भावुक और रसजीवी था । मेले-नौटंकी और सिनेमा का शौकीन । मेले-सिनेमा में लछिमा को ले जाने से मां कभी अगर टोकती भी, तो रतनसिंह मां को मनाकर अपनी जिद पूरी कर ही लेता । जब लछिमा को लम्बी असाध्य बीमारी ग्रस लेती है तब भी रतनसिंह की मां को बहुत दुःख होता है । उनसे बहू का दुःख देखा नहीं जाता

है । सास अपनी बहू लछिमा को कितना चाहती है , उसका वर्णन लेखक ने इन शब्दों में किया है —

" रतनसिंह को याद आया , आज मां ने बर्फी और जलेबी मंगा रखी है । कहा था सवेरे कि — " अब यह टिटरी शायद और ज्यादा नहीं चलेगी , रे रतनिया । आज अन्न छूटे अठारा दिन हो गये । दूध और दवा , छल्ल करके , दोनों को ज्यों-का-त्यों उलट देती । ... न जाने किस तरह और किसमें प्राण अटके हुए हैं अभागिनी के । रात-दिन आंखें उठाये आकाश की ओर देखती रहती हैं चील की तरह । न जाने क्या तृष्णा रह गयी इसके कलेजे में ... वैसे एक बार को जरा कोशिश यह भी करके देख लेता कि अगर कुछ जमीन-जेवर बेचकर भी ... " 37

यहां सास की , मां-सी ममता ही , बोल रही है । अन्यथा उनका काम तो चल ही रहा था । रतनसिंह रेवती को ले आया था और वह भी काफी अच्छी थी । दूसरी सास होती तो सोचती कि जल्दी मरे तो अच्छा , ताकि दवा-दारू के खर्चों से नजात मिले । परन्तु यहां लछिमा की सास तो अपनी बहू के लिए जमीन-जेवर भी बेचने को तैयार है ।

"घर-गृहस्थी" कहानी की परतिमा चाची एक आदर्श सास है । पति के गुजर जाने के बाद अपने भरे-पूरे परिवार की बागडोर वे इस प्रकार संभालती हैं कि गांव-भर के लोग उनकी वाह-वाही करते रहते हैं । साठ बरस पार करने के बावजूद भी उनके हाथ-पांवों का बल गया नहीं है ।" गांव-भर में सबसे फैला-फूला कारोबार ठहरा , मगर मजाल कि कभी जरा-सी भी अटक पड़ जाए । जैसा बल हाथ-पांवों में , वैसी ही मिठास सरस्वती में । परतिमा चाची के बताये काम को "ना" उनकी अपनी बहुओं के

मुंह से क्या निकलता , अड़ोस-पड़ोस की औरतों के मुख में भी यही बात होती कि "इसमें तकलीफ़ की कौन-सी बात है , सासू , आप जैसी सतनारी के मुख से जरा-सा हुक्म हमारे लिए निकल ही गया , तो उसे पूरा करना हमारा फर्ज होता है कि नहीं ? " " 38

परन्तु एक बार टीले पर से परतिमा चाची का पैर फिसला और वे हाथ-पांवों से कुछ लाचार हो गईं । दूर के खेतों में जाना तो दूर , घर-समीप के खेतों में जाना कठिन हो गया । घर का कारो-बार बढ़ा हुआ था । परतिमा चाची के चार बेटे थे , सभी अपने-अपने काम-धंधों में लगे हुए थे । यों मर्दों का काम तो संभल गया पर औरतों के हाथ का काम कुछ ढीला पड़ गया । देवरानियों-जिठानियों में कभी-कभार तू-तू भी हो ही जाती । दूसरे अपने-अपने हाथ-पांवों को आराम देना सभी को अच्छा लगता है और एक की आलस दूसरे को व्यापती है , यह भी उतना ही सच ठहरा । अतः फसल के खेतों में ही सुखने के दिन आ गये । गांव में इस बात को लेकर कुछ खुसुर-पुसुर भी होने लगी । परन्तु परतिमा चाची ने अपनी मीठी जबान से कुछ ऐसे काम लिया कि जो फसल बीस-बाईस दिनों में एक तिहाई भी नहीं सहेजी गई थी , वही सात-आठ दिनों में करीब-करीब पूरी हाथ आ गई । "गांव-घरों में लोग चक्कर में आ गए कि कहां परतिमा चाची की फसल के खेतों में ही झड़ने की नौबत आई हुई थी और कहां एक-एक बाल बिनकर छत-आंगन में पहुंच गई । " 39

परतिमा चाची बारी-बारी से बुलाकर बहुओं को ऐसे लाड़-प्यार करती है कि जैसे वही एक मात्र उनकी लाड़ली बहू हो । केवल एक ही उदाहरण यहां प्रस्तुत किया जा रहा है :

" बहू , कल सपने में मुझे मेरा सबसे छोटा छोरा सूरज दिखाई दिया । आज मंगलवार । असाढ़ में पलटन में भरती हुआ था । ... वैसे भी तो आंचल से भारी हुई तू । क्यों बहू , कितने महीने पूरे हो गये ? ... कुछ ही महीनों में तेरा आंचल दूध-पूत से भर जायेगा । ... मेरा बेटा बड़ा होशियार । देखना तू , तेरे लिए कैसे फैशनदार कपड़े लेकर आयेगा कि जिठानियां देखती ही रह जायेंगी । ... जैसी सुलच्छनी है तू , देख लेना , एक दिन भरपूर भण्डार की मालकिन बनेगी । सच , तू तो हमारे कुटुम्ब की साक्षात् लक्ष्मी है , क्या तेरा शील स्वभाव है । ... मेरी छाती में तो सुख के अंडे जैसे लुटकने लग जाते तुझे देखकर । सोने की नथ में चन्दक जैसी , लाखों में एक है तू बहू । ... बहू , यह ले , एक घूंट दूध पी , एक रोटी और खा ले । जिठानियों के साथ तो तुझे उनके बराबर ही कलेवा मिलता , मगर तेरी और उनकी बराबरी ही क्या ? एक तो तेरा पति परदेश , औरों के समान पति का सुख नहीं । दूसरे , तू जितनी मेहनत से काम करती , अब एक गास पेट में भी ठीक से नहीं जाता , तो तेरे हाथ-पांव चलेंगे कैसे ? और जैसी तू है , ऐसे में तो औरत को दूनी खुराक चाहिए । तब कहीं आंचल का दूध बढ़ता । " ... पारवती सासू के प्यार से एकदम गद्गद हो उठी थी और दूध-रोटी खाकर सीधे खेतों की ओर चली गई थी — " मांजी , भगवती दीदी , अभी पानी भरने से नहीं लौटी । कहती थीं , खेतों में साथ-साथ चलेंगी । ... मगर मैं बेकार इतनी देर घर रुक के क्या करूंगी ? भगवती दीदी को तुम लगा देना । उसके खेतों में पहुंचने तक तो मैं एक खेत की फसल काट लूंगी । " [40]

इस प्रकार परतिमा चाची मनोवैज्ञानिक ढंग से बहुओं से काम लेती हैं । उन्हें मालूम है किसकी दुखती रग क्या है , और उससे कैसे बात करनी चाहिए ।

"कुसुमी" कहानी के सास-ससुर भी अपनी बहू से बहुत

प्यार करते हैं । कुसुमी का पति अलमोड़ा की गवर्नमेण्ट स्कूल में चौकी-दारी का काम करता था । छुट्टी के दिन घर आता तो कुसुमी को खूब प्यार करता । पर निमोनिया बुखार कुंवरसिंह को ऐसे दबोचता है कि उसके प्राण लेकर ही छोड़ता है । कुसुमी की तो छाती ही फट गई थी । लगातार आठ दिनों तक वह एक गास तक नहीं तोड़ती है । तब सास-ससुर के प्यार , लाड़-दुलार तथा हमदर्दी के कारण ही कुसुमी इस वज्राघात को झेल पाती है । सास-ससुर कुसुमी को अपनी बेटी जैसी समझते हैं । दूसरी कोई सास होती तो जवान-जोध पुत्र के मरने पर बहू को कोंच खाती । पर यहां तो सास-ससुर कुसुमी के लिए अपने छोटे पुत्र केशरसिंह की बात सोचते हैं । केशरसिंह कुसुमी से तीन-चार साल छोटा है और कुसुमी के मन में भी उसको लेकर एक प्यारा-सा मोह है । केशरसिंह भी धीरे-धीरे समझदार हो रहा है और उसे भी अपनी भौजी बड़ी प्यारी लगती है । इस प्रकार सास-ससुर के स्नेहिल स्वभाव के कारण ही कुसुमी का घर पुनः बस जाता है । [41]

"खरबूजा" कहानी की कपिला की सगाई उर्बादत्त से हुई थी । उर्बादत्त फौज में था । कश्मीर की लड़ाई में उसके फौत होने की बात सुनकर कपिला के पिता ने उसका ब्याह खिमानंद से कर दिया । पर कुछ वर्षों बाद उर्बादत्त लौटता है और कपिला के प्यार में आजीवन अविवाहित रहने की बात करता है । इससे खिमानंद के मन में कपिला को लेकर संदेह पैदा होता है कि जरूर इसके उर्बादत्त से गहरे संबंध रहे होंगे । ऐसे में सदानंद नंदी पंडितानी को निकाल देता है , क्योंकि वह दोषरिया थी । खिमानंद उसे समझाना चाहता है , तब वह खिमानंद को उर्बादत्त की बात निकालकर खरी-खोटी सुनाता है । फलतः खिमानंद कपिला को घर से निकाल देता है । कपिला की सास कपिला को बहुत प्यार करती है और उसके खातिर खिमानंद से लड़ती भी है , पर

खिमानंद शालिग्राम की कसम खाकर कहता है कि उस घर में या तो कपिला रहेगी , या वह रहेगा । तब कपिला ही अपनी सास को समझाती है कि यदि उसमें "धरम-सत्त" होगा तो खिमानंद खुद समझेगा और उसे वापस बुला लायेगा । तब तक उसका मैके में रहना ही ठीक होगा । पर कुछ दिनों बाद जब खिमानंद घर के कामों के बहाने दूसरी औरत लाने की बात करता है , तब खिमा-नंद की मां , याने कपिला की सास , खिमानंद को काट खाने को दौड़ती है । बुढ़िया का पुण्य-प्रकोप इन शब्दों में फूट पड़ता है , यथा —

" खिमिया रे ! एक बखत कह दिया है , दुबारा मत कहना । एक बार तेरी जिद्द मान ली है , लक्ष्मी -जैसी बहू का मुख छोड़ दिया । बार-बार तेरा निठुरपना नहीं चलेगा । ला तो दूसरी जरा ? उसको घर में ठौर देने से पहले , अपनी महतारी की अर्थी उठानी पड़ेगी । मुझे भी शालिग्रामजी ही की कसम है । " बुढ़िया अपनी जर्जर छाती पिटते हुए बिलख पड़ी थी — " हे , राम ! किया होगा मैंने कोई सत-पुण्य तो आखिर मेरी लक्ष्मी ही मेरे पास लौटेगी और नाती का मुख देखकर मरूंगी । मेरी लाश जलाकर , अपने लिए दूसरी ले आना तू । " " 42

और अन्त में खिमानंद को अपने किए पर पश्चाताप होता है और वह कपिला को वापस लिवा लाता है ।

केवल "संस्कार" कहानी की ददिया-सास इसमें एक अपवाद है । वह अपने पोते की बहू के प्रति निष्ठुर है । परन्तु वह भी अपनी दूसरी बहुओं के प्रति उदार है । सास-बहू के इन मधुर संबंधों के पीछे कदाचित् कुमाऊं प्रदेश का परिवेश ही कारणभूत है । यहां खेतीबाड़ी तथा पशुपालन के काम में स्त्रियों की बहुत जरूरत रहती है । गरीबी

के कारण यहाँ की स्त्रियाँ खूब परिश्रमी और कमेरी होती हैं । उनका यह "कमेरापन" भी एक कारण है । दूसरे मेहनतकश लोगों में अन्य प्रकार की ग्रन्थियाँ भी कम पायी जाती हैं ।

बहुएँ :

उपर्युक्त चर्चा में प्रकारान्तर से बहुओं की बात आ ही गई है, तथापि नारी-जाति के इस रूप की चर्चा करना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि भारतीय समाज, सभ्यता और संस्कृति में इनका विशेष महत्व है । ग्रामीण-सभ्यता का तो यह एक महत्वपूर्ण अंग है । यहाँ बहुओं से तात्पर्य पुत्रवधुओं से है ।

मटियानीजी के कथा-साहित्य में दोनों प्रकार की बहुएं मिलती हैं — निहायत अच्छी और बुरी । किन्तु अपेक्षाकृत अच्छी बहुएं बहुतायत से मिलती हैं ।

" रुका हुआ रास्ता " कहानी में किसनसिंह की घरवाली अपनी बूढ़ी सास को छोड़कर गुलबिया सिपाही के साथ रंगरेलियाँ मनाने भाग जाती है । गांगुली के इस छिनारपने को लेकर किसनसिंह कहता है — " और कोई आदमी होता तो, सिर-फोड़ करने को तैयार हो जाता । मैंने चुपचाप तलाक लिख दिया कि — " जा सुसरी, जहाँ तेरी तबीयत लगती । मैंने अपने पांच सौ चालीस रूपये शादी के समय के हरजे-खरचे के वसूल पाये । " ... यही सोच लिया, औरत नहीं, एक घोड़ी ले आया था । " 43

"नाबालिग" की आनंदी, "प्रेतमुक्ति" की भवानी तथा "असमर्थ" की पार्वती इस प्रकार की स्त्रियाँ हैं । यद्यपि "असमर्थ" की पार्वती के साथ एक मानवीय पक्ष भी जुड़ा हुआ है, जिसकी चर्चा

आगे यथेष्ट स्थान पर ~~ की जाएगी ।

"पुरखा" कहानी के थोकदार के छः बेटे हैं छोटे बेटे खीमसिंह के साथ रहते हैं । थोकदारनी की मृत्यु हो गई है । थोकदार बेटों-बहुओं के आसरे पर पड़े हुए हैं । दूसरे बेटों की बहुओं का व्यवहार अच्छा नहीं है । थोकदार खीमसिंह और उसकी बहू पिरिमा को ज्यादा चाहते हैं, यह भी उनकी ईर्ष्या और जलन का सबब है । एक दिन मंझली बहू किसीसे कहती है —

" अरे, ससुरजी की बात क्या कहती हो ? एक खीमसिंह को पकड़ के बैठ गये हैं, जैसे और किसी दूसरे के हों ! अब वो ही अपना हाड़-मांस अलग करके बैठ गये हैं, तो हम क्यों रखें किसीx~~ से लाग-लपेट ? आते हैं, तो लोक-लाज रखनी पड़ती है । नहीं तो मेरा भरे ठेंगा किसीके लिए चिलम ! रात-दिन जिनकी चाकरी में लगे रहते हैं, उनके हाथों को झड़वा रोग तो नहीं हो गया । छोटी को बेटी हुई है, तो " हो भाऊ, हो पोथी " करते मुंह नहीं थकता । मेरे बालकों को कभी एक मीठी बात नहीं कही !"[44]

थोकदार का अपने बेटों और बहुओं से जी खट्टा हो गया है । वे सोचते हैं — " हे भगवान ! यह दिन दिखाने से पहले सिर पर इन्दर राजा का वज्र क्यों न गिरा दिया ... ? जिसकी घर-गिरस्ती संवारने में अपने हाड़ गला दियेक और दूसरे बेटे बहुओं के नटोरे और ताने सहे, वही आज गुलेल के गोले की तरह मारती है ? " [45]

परन्तु अपने मित्र जसवंतसिंह की बातों से थोकदार को ज्ञात होता है कि दूसरे घरों में तो ~~ स्थिति और भी खराब है । हरिसिंह की बहू थोकदार के बेटे पानसिंह की "इन्साफ पसन्दी" की बात करती है, तो थोकदार का मन फिर से जुड़ने लगता है । छोटी

बहू पिरिमा की बात अब उन्हें नहीं खटकती । लाड़ में पुकारते हुए कहते हैं — "क्यों छोटी बहू , अभी तक तमाखू भरके नहीं दिया तूने ? अरे , तुम लोग इतने बेऑडर क्यों हो गये हो ? कोई हांकने-चलाने वाला नहीं रहा , ऐसा समझते हो क्या ? "[46] इस पर पिरिमा झटपट चिलम भरके लाती है और अपना आँचल ठीक करते हुए कहती है — " ससुरजी , मुसी चुप नहीं होती , आपने गोद की ऐसी आदत डाल दी है कि जमीन पर पैर ही नहीं रखती । मैं खाना कैसे बनाऊं ? "[47] इस पर थोकदार बहू को लाड़ लड़ाते हुए कहते हैं — " ला-ला ! बहुत बात मत बना ! एक तो बच्ची है , उसे भी गोद खिलाने में आलस लगता है । "[48]

"घर-गृहस्थी" , "कुसुमी" , "खरबूजा" जैसी कहानियों में बहुओं के अच्छे शील-स्वभाव के कारण हमें एक नये रस — गार्हस्थ्य रस — का अनुभव होने ~~xxxxx~~ लगता है ।

भौजियां :

ऊपर जिस गार्हस्थ्य-रस की बात की गई है , उसमें देवर-भौजाई तथा ननद-भौजाई ~~xxxx~~ के मधुर संबंध तथा उनके बीच चलने वाली चुहलबाजियाँ अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं । मटियानीजी के उपन्यास "हौलदार" में तो इन चुहलबाजियों का ब्यौरेवार वर्णन मिलता है ; परन्तु "कुसुमी" , ~~xxxxx~~ "भस्मासुर" , "रुका हुआ रास्ता" , "उत्तरापथ" , "असमर्थ" , "इतिहास" , "नाबालिग" जैसी कहानियों में हमें इन "बत-रसिया" भौजियों के दर्शन होते हैं ।

"कुसुमी" कहानी का केशरसिंह कुसुमी का देवर है । वह कुसुमी से चार साल छोटा है । कुसुमी के पति मदनसिंह की मृत्यु

हो चुकी है । कुसुमी के सास-ससुर कुसुमी के शील-स्वभाव से इतने प्रसन्न हैं कि वे उसे खोना नहीं चाहते , अतः केसरसिंह अपनी भौजी पर आंचल डाल दे ऐसी उनकी मरजी है । कुसुमी को इस बात का पता है । अतः वह जब-तब केसरसिंह से हंसी-मजाक करने का मौका ढूंढती रहती है , पर केसरसिंह अपने लजीले स्वभाव के कारण ज्यादा हंस-बोल नहीं पाता । एक बार कुसुमी उसे अपनी नथ ठीक करने को कहती है , तब केसरसिंह कहता है कि नथ ठीक करना तो उसे नहीं आता , मां को बुला लेता हूं । तब देवर के भोलेपन पर हंसती हुई कुसुमी कहती है — " हाय , तू शर्मीला बानर क्या सुधारेगा मेरी नथ को । " 49

"भस्मासुर" कहानी का गजानंद एक स्वार्थी , लालची और लोभी भाई है । उसने चारों तरफ ऐसी बात फैला रखी है कि उसका भाई ब्रह्मानंद आदमियों की गिनती में नहीं है । ब्रह्मानंद के हिस्से की जायदाद भी वह हड़पना चाहता था । परन्तु पद्मा भौजी ऐसी नहीं है । एक बार वह ब्रह्मानंद से कहती है — " कुछ नहीं लला । तुम भी सारी जिन्दगी खेत में खड़े कठपुतले की तरह काट दोगे । अरे राम । खेत के कठपुतले की भी इतनी डर होती है कि कौवे मक्की उजाड़ते डरते । पास-पड़ोस की औरतों के भी देवर हैं । बातें करते हैं , तो नारंगी जैसी निचोड़ते हैं । " 50

इसके जवाब में ब्रह्मानंद मानो फूट पड़ता है — " मुझे तो मुर्दा तुम्हारे ही भरतार ने बना रखा है भौजी । सारे गांव-इलाके में मुझे नामरद बताता फिरता यह पहलवान , मगर चार बरस हो गए , तुम्हें लाए हुए । मक्की के खेत में घुघुती ने अण्डे दे दिए हैं , लेकिन तुम्हारा घोंसला उजाड़ । असल कठपुतला तो यही मर्द मराठा । मेरी शादी हो गई होती तो , बच्चे भी हो गए होते । " 51

ब्रह्मानंद की इस बात से गजानंद बौखला जाता है और वह पद्मा और ब्रह्मानंद को लेकर ऐसी बात करता है कि ब्रह्मानंद उसे मारने दौड़ता है । गजानंद लोगों में यह बात प्रचारित कर देता है कि ब्रह्मानंद ने उसकी भौजी के साथ छेड़खानी की थी । भौजी का खयाल करके ब्रह्मानंद गजानंद को तो छोड़ देता है, पर तीसरे दिन उसकी लाश मिलती है । वह आत्महत्या कर लेता है ।

"रुका हुआ रास्ता" की गोमती के पति को लकवा मार जाता है । अतः गोमती को दूर के रिश्ते के देवर के साथ खेतों में जाना पड़ता है । किसनसिंह की घरवाली गांगुली उसे छोड़कर भाग गई है । अतः किसनसिंह सोचता है कि गोमती यदि खिमदा के त्रास से ऊबकर उसके घरबार बैठ जाती है तो अच्छा है । वह हमेशा उसे फुसलाने के चक्कर में रहता है । भौजी के संबंधों के कारण कुछ छूट-छाट भी लेता है । एक दिन तो मौका देखकर वह गोमती को अपने कलेजे से लगाने की चेष्टा करता है । गोमती जैसे-तैसे अपने को छुड़ाते हुए कहती है — "देवर हो ! ~~अ~~ ऐसा नहीं करते किसी लाचार औरत के साथ । मुझे एक कलंक और क्यों लगाने की कोशिश करते ? अपनी फूटी हुई तकदीर के दुःखों को मुझे भोगना ही ठहरा ।" [52]

"असमर्थ" कहानी में बहादुरसिंह के सौतेले भाइयों का व्यवहार तो ठीक नहीं, परन्तु भौजियों का व्यवहार थोड़ा मानवीयतापूर्ण है । वे कभी-कभी उसके साथ हंसी-मजाक भी कर लिया करती हैं ।

बहनें :

नारी के ममतामय रूपों में बहन का भी स्थान है । वैसे तो अनेक कहानियों में बहनों का जिक्र मिलता है । परन्तु "काला कौवा" कहानी तो इसी xxxxx "थीम" पर लिखी गई है ।

"काला-कौवा" कहानी में कुन्ती बहन है, गोपिया उसका भाई। कुन्ती-गोपिया दोनों अनाथ हैं। मां-बाप काल-कवलित हो गए हैं। चाचा-चाची के जुल्मों और अत्याचारों को सहते हुए किसी तरह दिन काट रहे हैं। कुन्ती दिन भर काम में लगी रहती है, इस पर भी चाची लछुली के ताने-तिसने और नटौरे सुनने पड़ते हैं। कुन्ती अपने घर के अत्याचारों को तो बरदाश्त कर सकती है, पर अपने भाई गोपिया को जब चाची मारती है या गाली-गलौज करती है, तब उसकी आत्मा बुरी तरह से कलपती है। लछुली का चलता तो कुन्ती को सदा नौकरानी बनाकर रखती, पर लोकलाज भी कोई चीज होती है, अतः वह कुन्ती का ब्याह मैदानों के देशी लोगों के यहां कर वा देती है।

यहां पहाड़ी नारी-जीवन का एक नया आयाम हमारे सामने खुलता है। पहाड़ी गरीब लोग मैदानों में रहने वाले लोगों को "देसी" कहते हैं। ये ही "देसी" लोग पांच-सौ हजार देकर पहाड़ों की लड़कियों को ब्याह लाते हैं। कुंती का चाचा कुंती को पहाड़ों में ही देना चाहता है। उस पर लछुली कहती है —

" पहाड़ में ब्याहोगे, तो चार भाँड़े गांठ के ही लगाने पड़ेंगे। देसियों को दे दोगे, तो वे आप खर्च लगाकर डोली उठा ले जायेंगे। सात-आठ सौ की चोखी रकम ऊपर से मिलेगी, सो अलग। घर से रूप की पोटली खिसकेगी, लछमी मैया आयेगी। सात सौ में तो तीन असील भैंसे आयेंगी। शहर में दूध लबा दोगे हलवाइयों के यहाँ, तो घर-गृहस्थी को कुछ नून-तेल-गुड़ का आसरा हो जाएगा।" 53

इस प्रकार कुन्ती का विवाह "देसियों" के यहां तय हो जाता है। कुन्ती को अपनी चिन्ता नहीं है। उसे चिन्ता है अपने "पीठ-पीछे" के भाई गोपिया की। अतः विवाह के समय वह एक

शर्त रखती है कि वह अपने साथ अपने "छोरमुल्या" भाई गोपिया को भी ले जायेगी । लोक-मर्यादा के कारण कुन्ती का चाचा पहले तो तैयार नहीं होता , पर फिर लछुली कान में मंत्र फूंकती है । यथा—

' जाने दो गोपिया को इसी टकुली के साथ । अरे मूर्खो ! आज गोपिया नादान है , सब ठीक है । कल को सयाना हो जाएगा, बाल-बाल अपने हिस्से की जमीन-जायदाद रखवा लेगा । तुमको तो आजकल के कानून-कायदों का कुछ पता नहीं । जाने दो , बबाल कटेगा ।' 54

इस पर कुन्ती का भावी मालिक मोहकमसिंह अकड़ के साथ कहता है —' अरे , कह दो उस छोरी से , हम तराई के देशी लोग यहां के पहाड़ियों जैसे दलिद्दर नहीं । जब तक पड़ा रहेगा हमारे घोरे , टांग पसारे खावेगा सुसरा ।' 55

दामाद मोहकमसिंह की इस बात से कुन्ती का चाचा चतुरसिंह कसमसा जाता है , पर लछुली की यह बात उस पर अचूक मंतर फेर देती है —

' तो टिका के रखो अपनी छाती से पराये पूत को । अभी कुन्ती अड़ जायेगी , गलफांसी लगा लेगी , तब देखूंगी तुम्हारी हेकड़ी को भी मैं तो । आठ-सौ की चोखी रकम अंटी में आयी-आयी खिस-केगी , और ऊपर से पुलिस के हवाले होना पड़ेगा , तब जानोगे , लला ! सौत में आयी कुन्तुली जाने क्या कर बैठे ।' 56

कुन्ती गोपिया को अपने साथ ले गयी । पर वहां लछुली के रूप में उसकी सास थी । गोपिया के कारण कुन्ती को सुनना पड़ता था । अतः एक दिन गोपिया वहां से भी भाग जाता है । यथा —

" लिखा था — दिदी , अपना दुःख तो झेल लेता , तेरी आँखों का पानी ज्यादा गलाता । मुख-सामने रहूंगा , तो तू तड़फ-तड़फ कर मर जायेगी । एक मां तो छोड़कर चली गई , दूसरी को खुद छोड़ना पड़ रहा । सब अभागे माथे का लेख ठहरा , दिदी ! तू मुझे बिसर जाना । सोच लेना , पहाड़ का एक पंछी आया , उड़कर चला गया । अलमोड़ा लौटकर क्या करूंगा अब ? दिल्ली जाने का इरादा करता हूं । सुना , वहाँ पहाड़ी छोकरों को घरेलू नौकरी मिल जाती । कभी दिन फिरे , तुझे भेंटने लायक हो सका , तो तेरी देली मत्था टेकने आऊंगा जरूर । उसी दिन की बाट देखना और अपनी आँखों के आंसू पोंछ लेना । — तेरा अभागा भाई गोपिया । " 57

नारी-वंचना से ग्रसित स्त्रियाँ :

नारी भी मनुष्य है । कम-ज-कम आज का कथा-साहित्य तो तो इसे मानता है । अतः जिस प्रकार पुरुषों में अच्छे-बुरे पुरुष होते हैं , ठीक उसी प्रकार , स्त्रियों में भी अच्छी-बुरी स्त्रियाँ होती हैं । मटियानीजी ने अपनी कहानियों में नारी- के इन दोनों रूपों को विन्यस्त किया है ।

ऊपर जो "काला कौवा" नामक कहानी दी गई है , उसमें निरूपित लछुली ऐसी ही एक कर्कशा और ममताविहीन नारी है । अपने जेठ के बच्चों को वह बहुत ही त्रास देती है । चाचा चतुरसिंह कुछ उदार हैं , पर उनका कोई वश लछुली पर चलता नहीं है ।

"प्रेतमुक्ति" कहानी में किसनराम की पत्नी भवानी ऐसी ही एक नारी-वंचक स्त्री है । किसनराम एक सीधा-सादा हलिया है । पहले सौतेली मां ने उसे दबाया , बाद में भवानी आयी ।

किसनराम भवानी को खूब चाहता था , पर सीधा-सादा भवानी किसनराम भवानी को खुश नहीं रख पाता है । भवानी मस्तानी-दिवानी है । अतः वह दूसरे मर्द के साथ भाग जाती है । इस पर भी किसनराम को भवानी से घृणा नहीं होती । वह बार-बार केवल पांडे को अपनी सद्‌गति के लिए कहता है , उसमें भी उसका भवानी के प्रति जो स्नेह है , वही छलकता है । जीते-जी तो वह भवानी को दुःख दे नहीं सकता , पर मरने के बाद यदि उसकी सद्‌गति न हुई और वह प्रेतयोनि में गया तो उसका प्रेत भवानी को परेशान कर सकता है । यथा—

" महराज , अपने तरण-तारण की उतनी चिन्ता नहीं , इसी ध्यान से डरता हूं कि कहीं प्रेत-योनि में गया , तो उसे न लग जाऊं ? हमारी सौतेली महतारी में हमारे बाप का प्रेत आने लगा है , महराज ! उसके लड़के गरम चिमटों से दाग देते हैं उसे । वह नब्बे साल की बुढ़िया रोती-बिलबिलाती है । कहीं भवानी के लड़के भी उसे ऐसे ही न दागें ? ... जीते-जी अपना सारा हक-हुकम होते भी कठोर वचन तक नहीं कहा कि जाने दे रे किसनराम ! पुतली जैसी उड़ती छोरी है , जहां उसकी मर्जी आये , वहीं बैठने दे । ... उसे ही मरने के बाद दागते कैसे देख सकूंगा ? ... अच्छा गुसांईज्यू , अगर कोई आदमी जीते जी अपनी आंखें निकालकर किसी गरूड़ पक्षी को दान कर दे , तो वह प्रेत-योनि में भी अंधा ही रहता है , या नहीं ? " [58]

ऐसे साधु-संत जैसे पुरूष को छोड़कर भवानी दूसरे के घर-बार बैठ जाती है । किसनराम को देखकर एक सन्त का किस्सा स्मृति में कौंध जाता है । उनकी पत्नी भी उन्हें छोड़कर मुंह-अंधेरे किसी बदमाश के साथ भाग रही थी । जल्दी में वह अपनी जूतियां

घर भूल आयी थी । पीछे से संत जग गये , तो वे दौड़े-दौड़े उसकी उसकी जूतियां देने पीछे-पीछे गये कि "ठहरो , अपनी जूतियां तो लेती जाओ , नहीं तो तुम्हें कांटे चुभेंगे । " किसनराम इस संत से कम नहीं है । और भवानी ऐसे आदमी को धोखा दे जाती है ।

"नाबालिग" कहानी की अक्खे आनंदी भी नारी-जाति की बेवफाई का एक उदाहरण है । आनंदी का पति शेरसिंह फौज में था । कश्मीर फ्रन्ट की लड़ाई का अधमरा शेरसिंह तराई के घामों में चल बसा । अठारह साल की गृहस्थी में आनंदी को एक लड़का हुआ था , वह भी बचपन में ही चल बसा था । अतः आनंदी अब एकछड़ रह गई थी । शेरसिंह के शव-दाह से निबटते ही , वह सीधे दीवानसिंह के घर पहुंच जाती है और कहती है —

" दीवान , अब उस घर में अकेली कैसे रहूंगी मैं ? अपने मुलुक के तो कुकुर का भी बड़ा सहारा होता है , तुम तो बिलकुल अपने जैसे हो ।" 59

आनंदी गोरी-चिट्टी , तडंगी और जबरजण्डा औरत थी । दीवान बाईस साल का था और आनंदी चौंतीस साल की । इस विपुलवासनावती स्त्री को काबू में रख पाना दीवान के बस में नहीं था , और वह एक दिन कुशलसिंह के साथ भाग जाती है । दीवानसिंह उस पर मुकदमा चलाता है , तब आनंदी कोर्ट में बयान देती है —

" दीवानसिंह नाम का एक शख्श , जिससे मेरी सिर्फ दूर की जान-पहचान थी , मुझको बदनाम करने और फंसाने के लिए मुझ पर झूठे इल्जाम लगा रहा है । मैं इसकी ब्याहता छोड़ , इससे मेरा कोई भी रिश्ता-नाता नहीं है । मेरा पति तीन वर्ष

पहले मर गया और मुझे कुशलसिंह नामके मुझे मौजूदा खाविन्द को सौंप गया कि तेरी उम्र अभी बहुत पड़ी है, तू निस्संतान भी है, इससे शादी करके खुशी की जिन्दगी बिताना । कल जब मैं अपनी ससुराल की ओर जाते हुए बागेश्वर में उतरी थी, तो यह दीवान-सिंह नामका शख्श मुझसे खराब इरादा जाहिर करने लगा और मेरे तथा मेरे मौजूदा खाविंद के डाँटने पर इसने जालसाजी से हमको पुलिस में फंसवा दिया है । माननीय न्यायाधीश महोदय से मेरी प्रार्थना है कि इस गुण्डे के जाल से मुझे बचावें और इससे मेरा हर्जा-खर्चा दिलवायें, जो इसने दो दिन से मुझे परेशान करके कर रखा है । हुजूर की खिदमत में फिर अर्ज करती हूं कि मैं मौजूदा खाविन्द कुशलसिंह की ब्याहता हूं और छोरी पार्वती बच्ची भी मुझे इन्हीं से हुई है ।" 60

इस प्रकार आनंदी दीवानसिंह के भोलेपन का फायदा उठाते हुए थोड़े समय के लिए उसका उपयोग करती है, और एक साथ दोनों से सxxx संबंध रखती है । दीवानसिंह की पत्नी बन-कर रहती है और कुशलसिंह से बच्ची पैदा xxxxxx करवाती है । और अन्त में कुशलसिंह के साथ भाग जाती है, इतना ही नहीं संकट के समय काम आने वाले दीवानसिंह को कोर्ट में फंसा भी देती है ।

"असमर्थ" की कहानी भी इससे कुछ मिलती-जुलती है । इस कहानी का बहादुर एक कमजोर आदमी है । उस पर उसके सौतेलेक भाइयों का वर्चस्व है । बचपन से ही उसके दिलो-दिमाग पर सौतेले भाइयों का ऐसा आतंक है कि उनकी उपस्थिति में वह "एबनार्मल" हो जाता है । पार्वती को इस बात का बहुत दुःख होता है । वह अपने पति बहादुर की सेवा तो कर सकती

है , पर उसके भाइयों की ताबेदारी उसके स्वाभिमान को बरदाश्त नहीं , अतः वह शिवचरन के साथ भाग जाती है । बाद में बहादुर के भाई शिवचरन से कुछ रकम ऐंठने के लिए अदालत में मुकदमा दायर करते हैं पर मैजिस्ट्रेट पार्वती के हक में फैसला देते हैं — " कि बालिग औरत अपनी मर्जी से जा रही है , तो उसे जबर्दस्ती रोककर नहीं रखा जा सकता । " 61 जब पार्वती की शादी बहादुर से हुई थी , तब वह नाबालिग थी ।

बहादुर शिवचरन के पैरों में गिर जाता है — " छोड़ दे यार , शिवचरनसिंह , छोड़ दे यार पार्वती को । तू तो औरत-बच्चेवाला भाग्यशाली पुरुष है , यार । मुझ अभागे पर दया कर दे । मेरी पारबती को छोड़ दे । मेरी पारबती को मेरे साथ लगा दे । उसे अपने साथ हल्द्वानी मत ले जा । " 62

पार्वती से बहादुर की यह दशा देखी नहीं जाती है और वह शिवचरन का हाथ छुड़ाते हुए चिखते हुए स्वर में बहादुर से कहती है — " अगर तुम जायदाद का बंटवारा करवाकर , सौतेले भाइयों से न्यारा होने को तैयार हो तो मैं चलती हूं तुम्हारे साथ । बोलो ? " 63

कहानी के अन्त में यह संकेत दिया गया है कि पार्वती बहादुर के साथ रहना स्वीकार करती है । इस बिन्दु पर यह कहानी "नाबालिग" से अलग प्रकार की है । दूसरी बात यह है कि "नाबालिग" की आनंदी अपनी विपुल वासना की पूर्ति हेतु दीवानसिंह को छोड़कर कुशलसिंह के चली जाती है । आनंदी एक "निम्फो" औरत है । पार्वती ऐसी नहीं है । वह बहादुर के सौतेले भाइयों से बाज आकर यह कदम उठाती है । शायद यहां भी उसका उद्देश्य बहादुर के भीतर के पौरुष को जगाने की हो सकती है ।

"रुका हुआ रास्ता " कहानी की गांगुली किसनसिंह को छोड़कर गुलबिया सिपाही के साथ भाग जाती है । "वापसी" कहानी की संतो मास्टरनी भी स्त्री-वंचना का उदाहरण है । पुराना कर्जा पेड़ने धर्मेन्द्र मास्टर बम्बई जाते हैं , तो उनके पीछे सन्तो मास्टरनी प्रताप चौधरी और न जाने कितने लोगों से अपने शारीरिक सम्बन्ध कायम करतिह है । "और धरमवीर मास्टर ने पिछले दिनों ऐसी बातें भी सुनी हैं कि पिछले साल संतो मास्टरनी ग्रामसेविका बनी थी , तो उसका एक बी.डी.ओ. से भी नाजायज सम्बन्ध हो गया था । ... और यह भी कि पिछले सात वर्षों में गांव पार के नाले-जंगलों में दो-तीन भ्रूण पाए गए थे । "[64]

अतः धरमवीर मास्टर पुनः बम्बई लौट जाना चाहते हैं और अपने साथ अपनी बेटी केशो को भी ले जाते हैं । मास्टरजी की भावनाओं का चित्रण लेखक ने इन शब्दों में किया है —

" धरमवीर मास्टर यह भी कहना चाहते थे कि नगीना ताऊ [परताप चौधरी के पिता] ने झूठ नहीं कहा था कि संतो मास्टरनो को तो मैं अपनी ही बहू समझता हूं । ... इतना ही नहीं , धरमवीर मास्टर यह भी कहना चाहते कि 'संतो मास्टरनी जब नगीना ताऊ ने बताया था कि पूरबवाला खेत तुमने सारे गांव के सार्वजनिक उपयोग के लिए दे रखा है , उस समय मुझे यह पता नहीं था कि सिर्फ खेत ही नहीं , बल्कि तुमने खुद अपने को गांववालों के सार्वजनिक उपयोग के लिए ... "[65]

पर मास्टर रुलाई-भरे स्वरों में केवल इतना ही कह पाते हैं — " संतो , मैं आज ही बम्बई वापस लौट जाना चाहता हूं । मैंने तुम्हें आज तक बताया नहीं , मगर मैं दरअसल वहां से घर सिर्फ दस महीनों की छुट्टी लेकर आया था , हमेशा-हमेशा

के लिए नहीं । दूसरे , मैं केशो को भी साथ ले जा रहा हूं , ताकि इसे वहां कालेज में ऊंची शिक्षा दिलायी जा सके । तुम ... ऐसा करना , संतो , हमारे रास्ते के लिए कुछ पराठे ... " 66

इस प्रकार धरमवीर मास्टर जो बम्बई से वापस घर लौटे थे हमेशा-हमेशा के लिए , वे पत्नी की वंचकता के कारण पुनः बम्बई चले जाते हैं , एक भी अपशब्द कहे बिना ।

महिमामयी नारियां :

शैलेश मटियानीजी ने अपने कहानी-साहित्य में अनेक महिमामयी नारियों का चित्रण किया है । ये महिमामयी नारियां अपने शील-स्वभाव , स्नेह-ममता , त्याग-सेवा-भावना , साहस इत्यादि कारणों से हमारा ध्यान आकृष्ट करती हैं । "लोकदेवता" की थोकदारन , "सीने में धंसी आवाज" की कमला सूबेदारनी , "नंबा" की रेवती , "वीरलम्भा" की कमलावती , "कपिला" की कपिला घोड़यानी , "श्रिहx रमौती" की रमौती , "अहिंसा" की बिन्दा , "घर-गृहस्थी" की परतीमा याची , "गृहस्थी" की सावित्री , "अंतिम तृष्णा" की लछिमा और रेवती , "काला कौआ" की कुन्ती , "अर्द्धांगिनी " की रुकमा आदि कुछ ऐसे नारी-पात्र हैं जो बरबस हमारे मन में घर कर लेते हैं । उन पर आगे एक अलग अध्याय में विचार हो रहा है , अतः यहां केवल उनका उल्लेख-भर कर दिया गया है ।

पतले पेटवाली नारियां :

हालांकि यह बात स्त्री-पुरुष दोनों पर लागू होती है , पर पहले से एक "मीथ" चला आ रहा है कि स्त्रियों के पेट में कोई बात टिकती नहीं है । मटियानीजी के कथा-साहित्य में ऐसे अनेक

नारी-पात्र आते हैं । परंतु "किसी से न कहना" कहानी तो इसी थीम पर लिखी गई है । कहानी लोककथा की शैली में है ।

पिंगल के पिता मरते समय पिंगल से कहते हैं — "बेटा पिंगल , यह विश्वस्ता से मुझे भी अगाध स्नेह-प्यार है , फिर भी , इतना तुमसे कह जाना चाहता हूं — स्त्री मन की कच्ची होती है । जीवन के गुरुतर-गोपन रहस्यों से उसे सदैव अपरिचित ही रखना चाहिए । " 67

पिंगल मन ही मन सोचता है कि यदि विश्वस्ता जो उसकी उतनी विश्वसनीय है , उसका विश्वास न किया जाय , तो फिर किसका विश्वास किया जाय । अतः वह उसकी परीक्षा लेना चाहता है ।

पिंगल का घर पुरोहित-वृत्ति से चलता है । एक दिन आकर वह विश्वस्ता से "किसी से न कहना" कहकर , कहता है — "पनचक्की पर से पिसे-पिसाए आटे की थैली उठा लाया हूं , कि जब ईमानदारी से पेट-भर अन्न नहीं जुटा पाता , तो चोर-कर्म भी आपद्धर्म हो है । लेकिन , प्रिय , तुम यह बात किसी से न कहना । " 68

विश्वस्ता के पेट में यह बात पचती नहीं है । विश्वस्ता राधिका से कहती है , राधिका शैवाली को और शैवाली अपनी सहेली को यह बात बताती है और दो-एक दिन में तो यह बात पूरे गांव में फैल जाती है ।

राजा के सिपाही आकर पिंगल को पकड़कर ले जाते हैं । शामको पिंगल एक खून-सने रूमाल में कुछ बांधकर लाता है । विश्वस्ता पूछती है — "यह क्या है , आर्य ? " पिंगल कहता है —

" किसी से न कहना , प्रिय , इस बार बात न जाने कैसे बाहर चली गई । और मैं पकड़ा गया । मैंने राजा से क्षमा मांग ली । मैं और चारुदत्त साथ-साथ लौटे । उसने फिर से मुझे म्लेच्छ और चांडाल कहा । मैंने क्रोध में आकर उसका ... मैंने उसका ... 'क्या ?' विश्वस्ता चीख-सी उठी । ... मैंने उसका सिर काट लिया । पिंगल एक सांस में कह गया । क्रोध के आँखें नहीं होतीं, प्रिये । पर अब यह रहस्य प्रकट न हो किसी पर । नहीं तो , मैं प्राणदण्ड का भागी बनूंगा । " [69]

फिर वही पुराना हाल । रहस्य की बात गर्भस्थ-शिशु-सी विश्वस्ता के पेट में बढ़ने लगी । दूसरे दिन से ही वह आसन्न-प्रसवा-सी छटपटाने लगी । पड़ोसन के पूछने पर कहती है —

"बहन , अब तुम गात की दुबली , मुख की मलिन होने का कारण पूछ रही हो । पिछली बार राधिका चांडाली से धोखा खा चुकी हूं । "

" मैं तो राधिका जैसी हलकी नहीं हूं । " सुनयना नयन मटकाती बोली — " मेरे प्राण बाहर निकल सकते हैं , पर मन की बात नहीं । "

" "ऐसा ही स्वभाव दीदी , मेरा भी है । " कहने के बाद , विश्वस्ता ने बताया , कि कैसे पिंगल ने क्रोध में आके चारुदत्त की हत्या कर दी है । ... फिर बोली — " तुम पर भरोसा करके , मैंने मन की बात कही है । पर तुम , किसी से नकहना । " [70]

यों यह बात "किसी से न कहना" के माध्यम से गांव की सभी बहू-बेटियों तक पहुंच गई । पिंगल को फिर राजा के सिपाही

पकड़कर ले गये । पर शामको दोनों मित्र -- पिंगल और चारुदत्त हंसते हुए घर लौटे । रूमाल में चारुदत्त का नहीं बल्कि मरे हुए बकरे का सिर था ।

उच्च-वर्ग की नारियां :

मटियानीजी के कथा-साहित्य में ब्राह्मण-ठाकुर वर्ग की महिलाओं का भी चित्रण भी मिलता है । पंडिताइन , ठकुराइन , गौराइन आदि उच्च वर्ग की अनेक नारियां उनकी कहानियों में उपलब्ध होती हैं । "लीक" , "सीने में धंसी आवाज", "सतजुगिया आदमी" , "घर-गृहस्थी" , "कालिका-अवतार" , "वीरसम्भा" , "झुरमुट" , "खरबूजा" , "संस्कार" , " पुरोहित" "सुहागिनी" , "उत्तरापथ" , "घुघुतिया त्यौहार" , "इतिहास" आदि कहानियों में हमें ऐसे पात्र मिलते हैं ।

केशवानंद पुरोहित की भैंस मर गई है । उसे खींचने के लिए कोई डोम नहीं आता , क्योंकि उनके समाज में यह तय हुआ है । हरराम का बेटा परराम ही सबका नेता है । हरराम पुरोहित केशवानंद के क्रोध और तंत्र-मंत्र से डरता है , अतः चोरी-छिपे अपने पुराने मित्र कमलराम को लेकर केशवानंद के यहां पहुंचता है । तब पद्मावती बौराणज्यू हरराम से गुस्से में कहती है —

" अहा रे , कैसा सतजुग का जैसा समय था और कैसा म्लेच्छ बखत मेरी आंखों के देखते-देखते आ गया । हमारे शिवानंद के बाबू तो आज साक्षात् परशुराम-दुर्वासा ऋषियों की तरह कुपित हो रहे हैं । होंगे भी क्यों नहीं बेचारे कुपित । कहां स्नानं-ध्यानं-पुंडरीकाक्षं करके थोकदार के यहां पाठ करने जाना था , कहां सवेरे

से "तू आ रे परराम , तू आ रे नरराम । " चिल्लाते-चिल्लाते रह गए । आधी रात की मरी भैंस अभी तक बीच देहली में लमलेट पड़ी है । ऊपर आकाश में चील-गिद्ध घूमने लग गए हैं । एक गिद्ध अभी आकर छत पर की तुलसी के कनस्तर में बैठ गया था , मगर तेरा बेटा परराम न खुद आता है , और न दूसरों को ही आने देता है । हे राम , मेरी बांछो , बां-बों बिलख रही है , मगर मैं देहली कैसे पार करूं ? बाछी खुलवा देती हूं , तो बालकों के लिए दूध नहीं बचेगा । .... ले जायेगी , हे हरराम , तुम घमंडी लोगों को तो हम ब्राह्मणों और गोमाता की हाय-हाय एकदम जड़ से धो-पोंछकर उठा ले जायेगी ।" 71

पद्मावती बौराणज्यू के इन वचनों से हरराम घबरा जाता है , और दोनों हाथ जोड़कर बोलता है —

" बौराणज्यू "छिमा बड़न को धरम है , नीच धरम अभिमान । तब तक दया न छोड़िये , जब तक घट में प्राण । " कह रखा है । आप तो गुसांयनी , हम कमजोरों की माता के ठौर पर हैं । नादानी से भूल-चूक हो जाती है । आकाश के बादलों से कुपित हो जाये , बौराणज्यू , तो धरती की धूल कहां जायेगी ? .... मेरा परराम तो मूरख । शहर जाकर बिगड़ गया नालायक छोरा । .... धीरे-धीरे समझ जायेगा । गुसांयनी , पुरोहित गुसांई का कोप शांत करा देना माई ... भैंस उठाने को मैं और कमलराम आ गये । एक-दो रस्सियां दे दो ।" 72

पद्मावती बौराणज्यू का क्रोध कुछ शांत होता है । रस्सियां ढूंढकर देते हुए वे हरराम से कहती हैं —

" शाबाश , हरराम शाबाश । आखिर कुछ भी हो , तू

सतजुगिया आदमी है । अब तो इस संसार में से सारे धरम-करम उठते ही चले जा रहे हैं । अपने-अपने कुल-धर्म को लोग तिलांजलि देने लग गये । अरे , सत्य धर्म ही नहीं रहेगा तो , शेषनाथ भगवान को कहां से आधार मिलेगा । थोड़ा-बहुत जो धरम-करम शेष है , वह पुराने समय के लोगों में ही रह गया है , हरराम । आजकल के तो हम ब्राह्मण-पंडितों के बेटे भी मय कपड़े-जूते के खाने लग गये । हमारे ससुरजी तो अण्डे-मुर्गी का उच्चारण सुन लेने पर भी आचमन करके आत्मशुद्धि करते थे , मगर आजकल के लौंडि-लबार आमलेट-कबाब उड़ाने लग गये .... जब ~~xx~~x पंडितों की औलादों का ये हाल है, तो तुम शिल्पकारों के बच्चों को क्या दोष देना ?" [73]

इस प्रकार ऊपर पद्मावती बौराणीज्यू के जो विचार हैं उन पर तो उनके पति और ससुर की विचारधारा का प्रभाव है ही , फिर भी कहीं-कहीं उनकी माया-ममता और न्याय-विवेक के दर्शन हुए बिना नहीं रहते । लेखक ने मानवतावादी उदार निरपेक्ष दृष्टिकोण के साथ इनका निरूपण किया है ।

"प्रेतमुक्ति" कहानी का किसनराम केवल पांडे का हलवाहा था । उसकी पत्नी भवानी उसे छोड़कर चली गई थी । किसन बेसहारा हो गया था । ठीक से काम नहीं कर पा रहा था । तब उसने अपनी अनुपयोगिता बताते हुए अपने सौतेले भाइयों में से किसीको हलिया बनाने का प्रस्ताव रखा था और यह बात कहते हुए केवल ~~xx~~x पांडे की माताजी तथा भैरव पांडे की पत्नी कुसुमावती के सामने किसन रो पड़ा था । तब कुसुमावती ने अपने हाथों से किसन के आंसुओं को पोंछा था । पूरे गांव में बात हवा की भांति फैल गई कि पुरोहित घराने की ब्राह्मणी ने एक शूद्र के आंसू पोंछे । पर भैरव पांडे भी इस मामले में बहुत उदार थे । लेखक ने इस प्रसंग का वर्णन करते

हुए लिखा है —

" ब्राह्मणी , वह भी पुरोहित घराने की और अपने हाथों शूद्र के आंसू पोंछे , लेकिन भैरव पांडेजी ने क्या कहा था कि यह अशुद्ध होना नहीं , शुद्ध होना है । केवल पांडे के पूछने पर कुसुमावती की आँखें फिर गीली हो आईं थीं । बाली थीं — "दुःख सभी का एक होता है केवल । मैंने आंसू पोंछे , तो मेरे पांवों के पास की मिट्टी उठाकर , कपाल से लगाते हुए बोला था किसनराम —— " बौराणज्यू , पारसमणि ने लोहे का तसला छू दिया है , मेरे जनम-जनम के पापों का तारण हो गया है । " — शूद्र में जनमा है, मगर बड़ा मोह , बड़ा वैराग्य है किसनिया में । भवानी ने तो अपना नाम गारत कर दिया । इस भोले भंडारी को उजाड़कर गईं । " " 74

इस प्रकार कुसुमावतीजी काफी ममतामयी , स्नेहिल व उदार हैं । उनकी बहू , केवल पांडेजी की धर्मपत्नी चन्द्रावती , भी बिलकुल सास के कदमों पर चल रही हैं ।" कभी-कभी किसन-राम कृतज्ञ भाव में कह देता कि "बड़ी बहूरानीजी की तो देह-ही-देह गई है , आत्मा तो छोटी बहूरानी में समा गई ।" " 75

"इतिहास" तथा "उत्तरापथ" कहानियों में उप्रेती साहब के परिवार की कथा है । यद्यपि दोनों कहानियों के उप्रेती परिवार अलग-अलग है । ये उप्रेती पढ़-लिखकर भारत-सरकार में ऊंचे ओहदों पर पहुंच गए हैं और बड़े-बड़े नगरों में रहते हैं । परंतु उनका "पितरथान" तो पहाड़ों के गांवों में है । अतः वे कभी-कभार अपने "पितरथान" की मुलाकात लेने आते हैं । अतः यहां परिवेश गांव और शहर का मिला-जुला है । इन कहानियों में भी हमें भद्र वर्ग की शालीन एवं संस्कारी गृह-लक्ष्मियों के दर्शन

होते हैं ।

कामकाजी महिलाएँ :

"कामकाजी" महिलाएं " शब्द थोड़ा चौंकाने वाला लगता है । प्रश्न यह होता है कि क्या दूसरी महिलाएं कामकाज नहीं करती क्या ? निठल्ली बैठी रहती हैं ? दरहकीकत ऐसा है नहीं । बल्कि देखा गया है कि स्त्रियां बड़ी मेहनती होती हैं , सवेरे से शाम तक , बल्कि देर रात तक , काम में खटती रहती हैं । पुरुष देर से उठकर जल्दी से सो जाता है , जबकि स्त्रियां जल्दी उठकर देर से सोती हैं । फिर यह "कामकाजी महिलाएं " है क्या ?

वस्तुतः खेतीबाड़ी या पशुपालन जैसे परंपरागत कामों को छोड़कर जो स्त्री नौकरी करती है , वह "कामकाजी" महिला की श्रेणी में आती है । इस प्रकार शिक्षिका , ग्रामसेविका , मिड-वाइफ , नर्स , डाक्टरनी आदि की नौकरी में लगी हुई स्त्रियां इस कोटि में आती हैं । मटियानीजी की कहानियों का जो देशकाल है उसमें ऐसे नारी-पात्र बहुत कम मिलते हैं । बल्कि नहीं केxx बराबर हैं ।

नगरीय परिवेश की कहानियों में फिर भी ऐसे कुछ नारी-पात्र उपलब्ध हो जाते हैं , ग्रामीण परिवेश में तो ये पात्र नहींवत् हैं । "वापसी" कहानी में मास्टर धरमवीर की पत्नी को लोग "संतो मास्टरनी" कहते हैं , परंतु यह तो मास्टर धरमवीर की पत्नी होने के कारण है । परंतु इसी कहानी में यह बताया गया है कि यही संतो मास्टरनी मास्टर धरमवीर के बम्बई जाने पर कुछ समय के लिए ग्रामसेविका का कार्य करती

है और तब उसके बी.डी.ओ . के साथ शारीरिक संबंध भी स्थापित होते हैं । "पिछले साल संतो मास्टरनी ग्राम-सेविका बनी थी , तो उसका एक बी.डी.ओ. से भी नाजायज संबंध हो गया था । " 76

इस प्रकार "कामकाजी महिला" के साथ जुड़ा हुआ यह घृणित आयाम भी यहां उद्घाटित हुआ है । यद्यपि संतो मास्टरनी को तो ऐसा ही बताया गया है , अन्यथा भी उसके अन्य लोगों से नाजायज संबंध स्थापित होते हैं । नगीना चौधरी के बेटे परताप चौधरी से भी उसके इस तरह के संबंध हैं । परंतु ग्राम-सेविका होने के बाद उसे और भी खुला वातावरण मिल जाता है ।

"बित्ता भर सुख " मिले-जुले परिवेश की कहानी है । उसमें शर्मा डाक्टरनी और सुमित्रा का मिडवाइफ के रूप में चित्रण मिलता है । वैसे उनका हैड-क्वार्टर एक टाउननुमा शहर में है , परंतु समाज-कल्याण योजना के तहत उन्हें गांवों में भी जाना पड़ता है , अतः उसकी चर्चा यहां की गई है । विशेषतः सुमित्रा को गांवों के दौरे पर जाना होता है । गांव में जब किसी स्त्री को बच्चा होने वाला होता है , तब जचगी के लिए उसे ही बुलाया जाता है । वैसे तो वह मिडवाइफ है , पर गांव के लोग उसे भी डाक्टरनी ही मानते हैं ।

सुमित्रा का जब तबादला हो जाता है , लैंसडाउन जैसे छोटे शहर में , तो वह शर्मा डाक्टरनी से कहकर गंगाबाई के स्थान पर किसना को ले जाती है , यह कहकर कि गांवों में रात को जंगलों से होते हुए भी जाना पड़ता है । जब सुमित्रा ने शर्मा डाक्टरनी से यह कहा तब उसके चेहरे पर एक क्रूर और व्यंग्यपूर्ण हंसी फैल गई थी , क्योंकि वह सुमित्रा और किसना के संबंधों को शंका

की निगाह से देखती है । 77

सुमित्रा का खुला व्यवहार देखकर किसना उसके बारे में कुछ भावुक हो उठता है और उसकी एक फोटू अपने बटुवे में रखने लगता है । एक बार सुमित्रा यह देख लेती है, तब किसना से कहती है —

' बहुत-सी सच्चाइयां ऐसी भी होती हैं, जिन्हें आदमी एक बार गढ़ लेता है, तो उसे उनमें रस मिलने लगता है । अलबत्ता मेरा स्वभाव जरूर वहम पैदा कर देता होगा । बात-बेबात हंस पड़ती हूं । मगर मेरा हंसना तो धतूरे का फूलना है । आखिर बहुत सोचने पर मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि तुम्हें थोड़ा सावधान कर दूं, क्योंकि अपने-आप पर से पकड़ छूट जाने पर संभालना भी बेकार होता है । स्त्री-पुरुष का साथ होता है, तो मन में एक-दूसरे के लिए आकर्षण बढ़ता ही है । आग-पानी के साथ में भी बीच में कोई ऐसी चीज जरूर होनी चाहिए, जो दोनों को अपनी-अपनी जगह बनाए रखे । ... तुझे मैंने शायद, पहले कभी बताया नहीं कि मुझे छोड़ क्यों दिया गया था ? दरअसल मैं बचपन से ही कुछ ज्यादा भावुक रही । समझ तब उतनी थी नहीं । शादी हुए कुछ ही महीने बीते थे कि पड़ोस में ही गलत कदम रख बैठी । उन्होंने खुद देख लिया । बर्दाश्त नहीं कर सके । ... उनके रहते तो अपने पर पहरा लगा नहीं पाई थी, मगर अब ज्यों-ज्यों उम्र बीतती जाती है, लगता है, अब जितनी अपने ऊपर नजर रखते हुए कट जाए, अच्छा है । तुझ जैसा भला आदमी मुश्किल से ही मिलता है, जिसके साथ सच बोलते हुए डर नहीं लगे । नहीं तो मुझ जैसी औरतों को जिन्दगी का न जाने कितना बड़ा हिस्सा अपने-आपको छिपाए रखने में ही बीत जाता होगा । ... मैंने बहुत सोचा है, किसना ! मैं फिर कहती हूं ओहदे में तेरा छोटा होना मेरे लिए

कोई मानी नहीं रखता , मगर अपने स्वभाव को मैं तो जानती हूं । लम्बा साथ निभ नहीं पाएगा । छोटा निभाना और ज्यादा खोखला हो जाना होता है । ... यों , तेरे-मेरे बीच में फासला ही कितना है , ... कहते हुए , सुमित्रा फिर मुस्कराई और ~~अपने~~x अपने दायें हाथ का बित्ता उसके और अपने बीच में फैला लिया ।" 78

दलित-वर्ग की नारियां :

कुमाऊं के ग्रामीण परिवेश को लेकर मटियानीजी ने अनेक कहानियां लिखी हैं । उन कहानियों में जहां उच्चवर्ग के नारी-पात्र आये हैं , वहां दलित-वर्ग के नारी-पात्र भी आये हैं ।

"चिट्ठी के चार अक्षर " की दुर्गा बकरियां चराने जाती है , तो उसे गांव-भर के लड़के चिढ़ाते हैं —

"शहर बसंता जन रमै , धोबन-भंगन होय ।
आंव-गांव की डोमिनी, नाइन सब संग होय ।। " 79

दुर्गा के सिर पर छोटी जाति की होने का अभिशाप अंकुश की तरह लगा रहता था , इसलिए वह इन छिछोर ग्वालों की अश्लील बातों को झेल लेती थी । एक बार गांव के ठाकुर का लड़का परताप इन बंदरों को दुर्गा का पक्ष लेते हुए पीट देता है । तब से दुर्गा मन-ही-मन परताप को पूजने लगती है । परताप भी दुर्गा को चाहने लगता है । एक बार दुर्गा परताप को पूछती है —

"परताप ठाकुर ! छोटी जाति की लड़की का जूठा , मन को नहीं घिनाता ? " 80

तब उसके जवाब में परताप ने कहा था — "घिनौने जल को अंजुलि में भरकर , उससे आचमन ही कौन करता है , दुर्गी ? वर्जित

फल को मुंह कौन लगाता है ? जिसे भला माना जाता है , उसे ही मन दिया जाता है ? " 81

दुर्गा और परताप ठाकुर के मन मिल जाते हैं , तो तन भी मिल जाते हैं और मर्यादा की सीमा को लांघ जाते हैं । दुर्गा को गर्भ रहता है । परताप अपने घर और समाज वालों का खूब विरोध करता है । पर उसकी एक नहीं चलती । दुर्गा का बाप शोबनसिंह तो पंचायत में नालिश ठोंकने के लिए भी प्रस्तुत हो गया था , मगर दुर्गा अड़ गयी । " जो भाई-बिरादरों के आतंक से कसाई की गाय बनकर उसे त्याग चुका है , उससे हरजा-खरचा वसूलने से [illegible] क्या सुख मिलेगा । शोबनसिंह के जिद करने पर , आत्मघात कर लेने की धमकी दुर्गा ने दी थी तो वह भी चुप हो गया । और दुर्गा तब से कलंकिनी का शाप भोगती चली [illegible] आ रही है । " 82

दुर्गा को परताप ठाकुर से सहानुभूति है , [illegible] आक्रोश नहीं । परताप ठाकुर को भी अपनी कायरता कचोटती रहती है । एक बार आमने-सामने होने पर दुर्गा के मन में तो उलाहना देने की बात आयी कि उसे कहे — " ऐसा ही होता है ठाकुरों का वचन ? " पर ऐसा कह न पायी । बस इतना ही बोली — " मेरी तरफ से तू बेगुनाह है । " 83

पर परताप ठाकुर को बात कलेजे से लग जाती है । वह फौज में भरती हो जाता है । इधर दुर्गा परताप के बच्चे मधुआ [illegible] को जन्म देती है । फौज में कुछ बन जाने के बाद एक दिन दुर्गा के नाम परताप का "मन्यौडर" और पत्र आता है , जिसमें वह वहां से लौटने के बाद बाकायदा स्वीकारने की बात लिखता है ।

यहां दुर्गा एक दलित जाति की लड़की है , परन्तु अपने

मूल्यों पर वह कायम रहती है । मेहनत-मजदूरी करती है , पर समझौता नहीं करती । बच्चा नहीं गिराती है ।

"नंगा" कहानी की रेवती हरिराम की बीबी है । हरिराम बीमार चल रहा था । हरिराम ठाकुर गुमानी का हलिया है । शायद ठाकुर को पहले से ही मालूम था कि हरिराम ज्यादा नहीं खींचेगा । अतः गुमानी ने बिरादरी से अलग अपनी जमीन पर उसके लिए मकान बनवा दिया था । हरिराम के मरने पर रेवती उस घर को छोड़कर अपनी बाखली में आ जाना चाहती थी , पर ठाकुर के मन में पाप था , अतः वह उसे आग्रहपूर्वक रोक लेता है । ठाकुर धीरे-धीरे रेवती को अपने मोहजाल में फंसाता है । रेवती को ठाकुर से गर्भ रहता है । ठाकुर उसे गिरवाने के लिए तरह-तरह की दवाइयाँ भिजवाता है , पर गर्भ नहीं गिरता । आखिर रेवती तय करती है कि बच्चा हुए बाद उसे कोसी में बहा देगी । परंतु बच्चा हुए बाद रेवती का महतारी रूप जोर मारता है और वह सबका विरोध झेलते हुए उसे पालने-पोसने का निर्णय करती है । यथा —

" रेवती ठकुरानी से कहना चाहती थी — " गुसांइनी , तुम्हारे ठाकुर ने घर बहुत सोच-समझकर लगवाया , मगर जिसे नौ महीने ढोया , उसे उतनी जल्दी गाड़बगो {नदी में बहा देना} देने की ताकत मुझ में नहीं । " " 84

रेवती मामला पंचायत में ले जाती है । पर कहावत-मुहावरों के उस्तादों के सामने रेवती को न्याय कहां से मिलता । केवल रेवती का ककिया ससुर अंत तक उसके पक्ष में रहा । पर वह अकेला था । लेखक ने पंचायत के न्याय का बड़े व्यंग्यात्मक ढंग से चित्रण किया है :—

" जैसी भी हुई अपने ही गांव की ठहरी । ज्यादा

जवाब-सवाल करके बेचारी की इज्जत और ज्यादा सरेआम उतारना ठीक नहीं । पाप भी मनुष्यों से ही होते । फिर उम्र का दोष भी व्यापने वाला ही हुआ । पांव गड्ढे में गिरा तो जल्दी में किनारे के पेड़-पौधे को ही थामा जाता । नादान ठहरी बेचारी घबराहट या कि दबाव में अपने ही अश्रयदा×× आश्रयदाता का नाम ले बैठी । अक्ल ही इसे होती , तो किसी ऐसे लौंडे-लबारे का नाम लेती , जिस पर लोग भी कहते कि हां , हो सकता है और पंचायत को भी शक-शुबहा होता । अब ये तो हद हो गई कि खेत की बाड़ कहे कि तेरे किनारे हूं , तो पहले तुझे ही खाऊंगी । बेचारी सयाने बाल-बच्चों वाले गुमानी ठाकुरजी को मुसीबत में डाल दिए इसने — नकटे के नाक पर रूख जमा । काटेगा कहां , बोला कि छाया में बैठूंगा । .... गुमानी ठाकुर पर झूठी तोहमत लगाने की नादानी के लिए रेवती माफी मांग ले और पंच-लिखित माफीनामे पर अंगूठा लगा दे , तो यह पंच सिफारिश जरूर कर सकते हैं कि एक बेवा-लावारिस औरत पर दया करके , उसके पति को दी हुई जमीन में से थोड़ी-बहुत उसीके कब्जे में रहने दी जाये ।' 85

पंचों की इस बात से रेवती का पुण्य-प्रकोप फूट पड़ता है । कहां तो वह अपने बच्चे की परवरिश के लिए और हर्जा-खर्चा के लिए पंच के पास गई थी और कहां अब उससे इनकार करते हुए बोलती है —

' पंच महाराज लोगों , हंसों की पांत तो जरूर गु खा गई , मगर कौवे की जात अपना धर्म नहीं छोड़ेगी । जिस दगाबाज ने थूक के चाट लिया , उसकी जमीन में पांव रखने से मर जाना बेहतर । .... होगा कहीं परमेश्वर , तो कभी-न-कभी मेरा इन्साफ वही करेगा । मैं तो अपनी संतान की हत्या

खुद नहीं ही करूंगी । बैल को बेच दूंगी । गैया को यहीं बांध लूंगी , मगर हूं अगर मैं हरराम की घरवाली और इस नत्था की महतारी ... ठकुरानी नहीं शिल्पकारनी हूं , मिहनत-मजदूरी से गुजर करूंगी ... पी रखा है मैंने भी अगर अपनी महतारी का दूध — तो आज के दिन से इस गुमानी ठाकुर की जमीन और मकान में हगने-मूतने भी नहीं जाऊंगी ।" [86]

इतना कहते हुए रेवती गांव से बाहर की ओर चली गई । सबको बोलती बन्द हो गई । गुमानी ठाकुर रेवती को ढूंढते हुए कोसी पहुंचे तो रेवती के चचेरे ससुर सगतराम ने आवाज़ दी — " क्यों महाराज ! हो गया , पंचायत में रेवती का फैसला ? " [87] उस समय सगतराम का एक तरफ का लंगोट खुल चुका था और वह पानी में नंगा खड़ा था ।

"रहमतुल्ला" की खिमुली , कपिला" की कपिला , "रुका हुआ रास्ता" की गोमती ,नद्दुली , गांगुली ; "चुनाव" की कमला शिल्पकारनी , "प्रेतमुक्ति" की भवानी ,"अहिंसा" की बिन्दा आदि अन्य दलित नारियों का चित्रण भी यहां मिलता है ।

<u>निष्कर्ष :</u>

अध्याय के समग्रावलोकन पर निम्न लिखित निष्कर्षों तक पहुंच सकते हैं :—

§1§ मटियानीजी के कहानी-साहित्य में , ग्रामीण परिवेश की कहानियों में नारी-पात्रों में काफी वैविध्य दृष्टि-गोचर होता है ।

§2§ ग्रामीण परिवेश की कहानियों में फौजी पत्नियों के दुःख-दर्द तथा उनके उमंग-उत्साह का चित्रण बहुतायत से पाया जाता है । इन कहानियों में दाम्पत्यरस- प्रेमरस भी खूब मिलता है । इनमें नारी-वंचना या पुरुष-वंचना के उदाहरण नहींवत् हैं ।

§3§ फौजी पत्नियों की भांति फौजी-माताओं का चित्रण भी प्रायः वीर-प्रसूता×xx जननियों के रूप में मिलता है ।

§4§ इन कहानियों में थोकदारनियां , ठकुराइनें , पधानियां , पंडितानियां , गौराइनें आदि उच्च-वर्ग की महिलाओं का चित्रण कलागत निरपेक्षता के साथ हुआ है ।

§5§ इन कहानियों में हमें नारी के विभिन्न रूप जैसे — महतारियां , पत्नियां , बहनें , मौजियां , ननदें , सास , बहुएं , सालियां , सौतियां , सपत्नियां — मिलते हैं ।

§6§ इनमें नारी-वंचना के उदाहरण भी मिलते हैं ।

§7§ कामकाजी महिलाओं का चित्रण यहां नहींवत् हैं ।

§8§ दलित महिलाओं के चित्रण में लेखक ने जहां उनके नैतिक शोषण को रेखांकित किया है , वहां उनके आत्माभिमान , आत्म-दर्प एवं उनके परिश्रमी-प्रामाणिक जीवन को भी समेकित किया है ।

&&&&&&&& XXXXXX &&&&&&&&

:: सन्दर्भानुक्रम :: *

§1§ मेरी तैंतीस कहानियाँ : भूमिका : पृ. 5 ।

§2§ वही : पृ. 32 ।

§3§ पोस्टमैन : बर्फ की चट्टानें : पृ. 23 ।

§4§ वही : वही : पृ. 19-20 ।

§5§ अर्द्धांगिनी : भविष्य तथा अन्य कहानियाँ : पृ. 30 ।

§6§ पोस्टमैन : ब.च. : पृ. 20 ।

§7§ अर्द्धांगिनी : भ.त. अ. क. : पृ. 29-30x ।

§8§ वही : वही : पृ. 29-30 ।

§9§ पोस्टमैन : ब.च. : पृ. 20 ।

§10§ सीने में धंसी आवाज : ब.च. : पृ. 99 ।

§11§ वही : वही : पृ. 99 ।

§12§ लोकदेवता : ब.च. : पृ. 63-64 ।

§13§ वीरखम्भा : सु.त. अ. क. : पृ. 99-100 ।

§14§ पुरखा : सु.त.अ.क. : पृ. 45 ।

§15§ द्रष्टव्य : लीक : ब.च. : पृ. 38 ।

§16§ दशरथ : मे.तैं.क. : पृ. 219 ।

§17§ द्रष्टव्य : कालिका-अवतार : मे.तैं.क. : पृ. 97 ।

§18§ सावित्री : ब.च. : पृ. 174-175 ।

* ब.च. = बर्फ की चट्टानें ; मे.तैंक. = मेरी तैंतीस कहानियाँ
भ.त.अ.क. = भविष्य तथा अन्य कहानियाँ ; सु.त.अ.क. =
सुहागिनी तथा अन्य कहानियाँ ।

(19) घुघुतिया त्यौहार : ब.च. : पृ. 560 ।

(20) अंतिम तृष्णा : सु.त.अ.क. : पृ. 67 ।

(21) वही : वही : पृ. 74 ।

(22) द्रष्टव्य : रुका हुआ रास्ता : ब.च. : पृ. 399 ।

(23) वही : वहो : पृ. 400 ।

(24) संस्कार : पा.त.अ.क. : पृ. 63-64 ।

(25) वही : वही : पृ. 70 ।

(26) द्रष्टव्य : इसी प्रबंध में : पृ. 163 ।

(27) द्रष्टव्य : जनजातीय जीवन और संस्कृति : डा. राजीव -लोचन शर्मा : पृ. 288 ।

(28) दशरथ : मे.सैं.क. : पृ. 219 ।

(29) द्रष्टव्य : अंतिम तृष्णा : सु.त.अ.क. : पृ. 74 ।

(30) संस्कार : पा.त.अ.क. : पृ. पृ. 65 ।

(31) अहिंसा : अ.त.अ.क. : पृ. 10 ।

(32) वही : वही : पृ. 15 ।

(33) अंतिम तृष्णा : सु.त.अ.क. : पृ. 74 ।

(34) सीने में धंसी आवाज : ब.च. : पृ. 98 ।

(35) द्रष्टव्य : पोस्टमैन : ब.च. : पृ. 20 ।

(36) अंतिम तृष्णा : सु.त.अ.क. : पृ. 66 ।

(37) वही : वही : पृ. 71 ।

(38) घर-गृहस्थी : सु.त.अ.क. : पृ. 101 ।

(39) वही : वही : पृ. 103 ।

(40) वही : वही : पृ. 104-106 ।

==============================

* सु.त.अ.क. = सुहागिनी तथा अन्य कहानियां ; पा.त.अ.क. = पापमुक्ति तथा अन्य कहानियाँ ।

§41§ द्रष्टव्य : कुसुमी : पा.त.अ.क. : पृ. 82 ।
§42§ खरबूजा : पा.त.अ.क. : पृ. 33 ।
§43§ रुका हुआ रास्ता : ब.च. : पृ. 408 ।
§44§ पुरखा : सु.त.अ.क. : पृ. 44 ।
§45§ वही : वही : पृ. 45 ।
§46§ वही : वही : पृ. 49 ।
§47§ वही : वही : पृ. 49 ।
§48§ वही : वही : पृ. 49 ।
§49§ कुसुमी : ब.च. : पृ. 156 ।
§50§ आत्मातुर : ब.च. : पृ. 392 ।
§51§ वही : वही : पृ. 392 ।
§52§ रुका हुआ रास्ता : ब.च. : पृ. 407 ।
§53§ काला-कौवा : सु.त.अ.क. : पृ. 34 ।
§54§ वही : वही : पृ. 38 ।
§55§ वही : वही : पृ. 38 ।
§56§ वही : वही : पृ. 38 ।
§57§ वही : वही : पृ. 40 ।
§58§ प्रेतमुक्ति : ब.च. : पृ. 472 ।
§59§ नाबालिग : पा.त.अ.क. : पृ. 13 ।
§60§ वही : वही : पृ. 20-21 ।
§61§ असमर्थ : ब.च. : पृ. 524 ।
§62§ वही : वही : पृ. 524 ।
§63§ वही : वही : पृ. 525 ।
§64§ वापसी : मैंड़ि और गड़रिये : पृ. 170 ।
§65§ वही : वही : पृ. 170-171 ।

(66) वापसी : मेंड़ और गड़रिये : पृ. 172 ।

(67) किसीसे न कहना : मे.तैं.क. : पृ. 26 ।

(68) वही : वही : पृ. 27 ।

(69) वही : वही : पृ. 29 ।

(70) वही : वही : पृ. 29 ।

(71) सतजुगिया आदमी : ब.च. : पृ. 136-137 ।

(72) वही : वही : पृ. 137 ।

(73) वही : वही : पृ. 137 ।

(74) प्रेतमुक्ति : ब.च. : पृ. 469 ।

(75) वही : वही : पृ. 470 ।

(76) वापसी : मेंड़ तथा गड़रिये : पृ. 170 ।

(77) द्रष्टव्य : बित्ता भर सुख : ब.च. : पृ. 333 ।

(78) वही : वही : पृ. 341-342 ।

(79) चिट्ठी के चार अक्षर : ब.च. : पृ. 77 ।

(80) वही : वही : पृ. 78 ।

(81) वही : वही : पृ. 78 ।

(82) वही : वही : पृ. 79 ।

(83) वही : वही : पृ. 79 ।

(84) नंगा : ब.च. : पृ. 161 ।

(85) वही : वही : पृ. 164 ।

(86) वही : वही : पृ. 165 ।

(87) वही : वही : पृ. 166 ।